ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

परोपकारिणी

वर्ष - ५४ अंक - २१ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र नवम्बर (प्रथम) २०१३

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

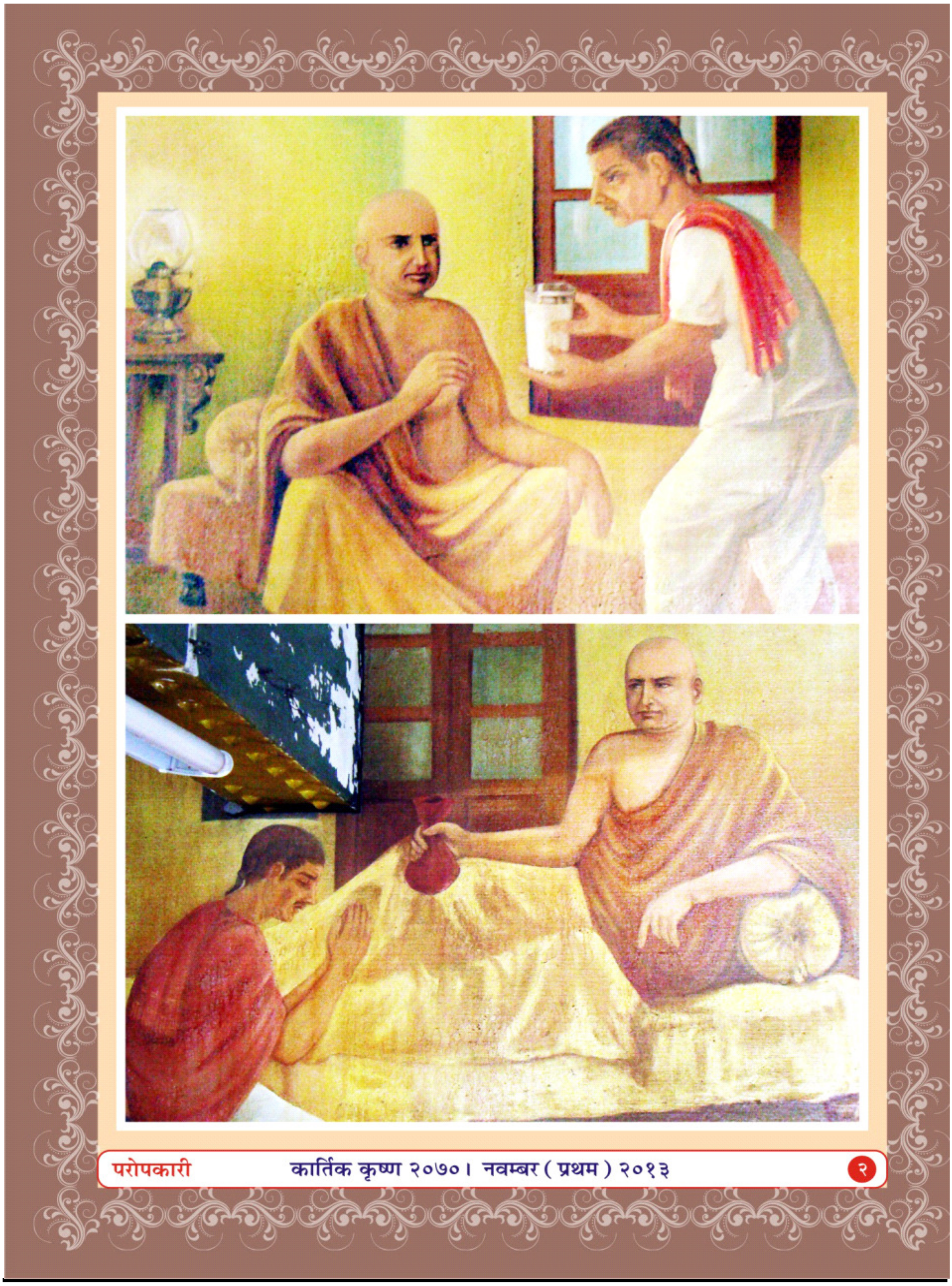
परोपकारी
कार्तिक कृष्ण २०७०। नवम्बर (प्रथम) २०१३
२

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५४ **अंक** : २१
दयानन्दाब्द: १८९
विक्रम संवत्: कार्तिक कृष्ण, २०७०
कलि संवत्: ५११४
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११४

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

नवम्बर प्रथम २०१३

अनुक्रम

१. स्वामी दयानन्द की विलक्षणता	सम्पादकीय	०४
२. मन को बदलना सीखें	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०९
४. दुष्कर्म की बढ़ती घटनाएँ व उनसे....	सत्यवान् आर्य	१३
५. आर्यसमाज और वेद प्रचार	डॉ. महेश	१८
६. १५६ वर्ष पूर्व जब दिल्ली खून....	विरजानन्द दैवकरणि	२१
७. आर्यों का आदि देश	इन्द्रजित् देव	२४
८. देश के प्राथमिक क्षेत्र में दुर्व्यवस्था	उमाकान्त उपाध्याय	३०
९. वेदों की बातें	रामप्रसाद शर्मा	३४
१०. जिज्ञासा समाधान-५०	आचार्य सोमदेव	३६
११. संस्था-समाचार		३९
१२. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

स्वामी दयानन्द की विलक्षणता

समाज में जो लोग कुछ नया करते हैं उनका व्यक्तित्व औरों से पृथक् होता है। यह पृथकता सामान्य लोगों से कुछ न कुछ जुड़ी रहती है। इसमें ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व पर विचार करें तो उनका व्यक्तित्व न केवल औरों से हटकर है अपितु विलक्षण है। उनके जीवन में छोटे से लेकर बड़े कार्य तक विचार करने पर अभूतपूर्व लगते हैं। आप के विचार और व्यवहार में जहाँ गहरी बौद्धिकता पाते हैं वहीं धर्म के प्रति निष्ठा भी उतनी ही दृढ़ है। प्राय: देखा जाता है जो व्यक्ति अपने को बुद्धिजीवी समझते हैं वे किसी अंश में धर्मद्वेषी हो जाते हैं। इसके विपरीत जो अपने को धार्मिक मानते हैं उनकी बुद्धि से दूर का भी सम्बन्ध देखने में नहीं आता। ऋषि दयानन्द का व्यक्तित्व इन दोनों से विलक्षण है।

आजतक जितने भी विद्वान्, धर्माचार्य, समाज सुधारक हुए हैं सभी का अपने स्थान से सम्बन्ध बना रहा है। वे अपने स्थान के कारण ही जाने पहचाने जाते हैं। ऋषि दयानन्द यहाँ भी विलक्षणता लिए हुए हैं। अपने उनसठ वर्ष के जीवन में वे सतत् यायावर बनकर ही रहे हैं। घर छोड़ने के पश्चात् वे लम्बे समय तक अपने अध्ययन काल में मथुरा में गुरु विरजानन्द जी के पास प्राय: अढ़ाई-तीन वर्ष रहे हैं। उस मथुरा से भी उनके जीवन में कोई लगाव या मोह दिखाई नहीं देता। मथुरा से निकल कर मृत्यु पर्यन्त वे भ्रमण ही करते रहे हैं। कहने को उनके पास अपना पुस्तकालय था, अपना प्रेस था, प्रकाशन और विक्रय का कार्य भी निरन्तर चलता रहता था परन्तु कोई स्थान स्वामी दयानन्द का अपना नहीं बन सका। देश के विशाल भूभाग पर वे अपने पुस्तकालय व सेवकों के साथ ही भ्रमण करते रहे। उनका घर सदा उनके साथ रहा। ऋषि के जीवन में एक बड़ी मार्मिक घटना आती है। स्वामी जी ने बहुत सारी छपी पुस्तकें अपने भक्त मास्टर सुन्दरलाल जी के घर पर रखवा दी। मास्टर जी ने अपने घर से पुस्तकें मंगाने के लिए लिखा तो स्वामी जी महाराज ने उत्तर दिया, ''हमारा तो कोई घर है नहीं, आप लोगों का घर ही हमारा घर है, हम पुस्तकें मंगा कर कहाँ रखेंगे। अपने पास ही रहने दीजिये।''

स्वामी जी के शिष्यों व भक्तों में बड़े राजे-महाराजे व सेठ, साहूकार भी थे, वे बहुत बड़े-बड़े स्थान ऋषि को आश्रम मठ बनाने के लिए दे सकते थे परन्तु स्वामी जी के मन में कभी आश्रम या स्थान बनाने की बात नहीं आई। हम उनके पूरे जीवन का अध्ययन करके भी ऐसा नहीं पाते कि उनका किसी स्थान व व्यक्ति से कोई विशेष मोह हो।

ऋषि की यायावरी वृत्ति ने उन स्थानों को ही ऋषि का स्थान बना दिया। स्वामी जी के उत्पन्न होने से टंकारा, स्वामी जी के विद्याध्ययन करने से मथुरा, आर्यसमाज की स्थापना करने से मुम्बई और स्वामी जी के बलिदान से जोधपुर और अजमेर स्वयं ही ऋषि के अनुयायी व भक्तों के लिए ये स्थान तीर्थ स्थान बन गये। इसके अतिरिक्त स्वामी जी जहाँ-जहाँ भी रहे, जहाँ उपदेश दिया, समाज सुधार का कार्य किया वे सभी स्थान आज हमारे लिए तीर्थ बन गये हैं। उनके भक्तों का उन स्थानों से मोह है परन्तु ऋषि का उनके जीवन में किसी स्थान से मोह दिखाई नहीं देता।

जैसे स्थान से ऋषि को मोह नहीं वैसे ही किसी व्यक्ति विशेष में भी उनका मोह दृष्टिगत नहीं होता। सभी से उनका स्नेह है जो जितना देश धर्म के लिये सहयोगी है स्वामी जी के लिए वह उतना ही आदर के योग्य। जैसे उन्होंने अपना कोई स्थान नहीं बनाया उसी प्रकार उन्होंने अपना कोई शिष्य भी नहीं बनाया। किसी व्यक्ति को अपना उत्तराधिकारी भी नहीं बनाया। उन्होंने अपने जीवन में अनेक संस्थायें बनाईं। सामाजिक कार्यों के लिए आर्यसमाज की स्थापना की। स्वामी जी के विचार और सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार का उत्तरदायित्व आर्यसमाज पर है। स्वामी जी ने गो और इस देश की कृषि की रक्षा और उन्नति के लिए गोकृष्यादि रक्षिणी सभा की भी योजना की। अपने प्रेस, प्रकाशन, धन वस्त्र आदि देकर, अपने ग्रन्थों के प्रकाशन, साहित्य का निर्माण, विद्वान्, उपदेशक, प्रचारकों को तैयार कर देश-देशान्तर, द्वीप-द्वीपान्तर तक वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करना तथा आर्यावर्तीय दीन-अनाथों की रक्षा व उन्नति का उत्तरदायित्व परोपकारिणी सभा के नाम कर दिया। उदयपुर में इसकी रचना कर वहीं महाराजा की सभा में उसका पंजीकरण कराया और छ: मास बाद ही अपनी जीवन लीला का संवरण कर लिया। धर्म के क्षेत्र में जल रही व्यक्ति पूजा को देखकर उन्होंने व्यक्ति को धर्म का पर्याय और अवतार मानने से इंकार कर दिया। इस विषय में ऋषि दयानन्द इतने आगे थे कि उसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता।

आज तक जिस किसी गुरु ने अपने धर्म, मत, पन्थ चलाया वह उस पन्थ का प्रवर्तक बना परन्तु ऋषि ने अपने को किसी मत-पन्थ का प्रवर्तक न बना कर, आदि वैदिक

धर्म का प्रचारक ही बनना स्वीकार किया। गुरु बनने वालों ने अपने शिष्यों को जानने और सोचने का अधिकार नहीं दिया। जिन गुरुओं के शिष्यों की संख्या लाखों-करोड़ों में है उनका गौरव, उनका बड़प्पन इस कारण बना हुआ है क्योंकि उन्होंने अपने शिष्यों को अपनी बुद्धि के उपयोग का अधिकार नहीं दिया। यही एक रहस्य की बात है कि आप तभी तक बड़े बुद्धिमान हैं जबतक मूर्खों की बड़ी संख्या आपके पीछे चल रही है। यह तभी सम्भव है जब आप विवेक का अधिकार केवल अपने आधीन रखे, सब गुरु, महात्मा, धर्म प्रवर्तक इसी पथ पर चलने का यत्न करते हैं। इसके विपरीत स्वामी दयानन्द ने विवेक अधिकार को मनुष्य मात्र के मौलिक अधिकार के रूप में स्वीकार किया है।

स्वामी जी किसी बात को कहने मात्र से स्वीकार कर लेने की सम्मति नहीं देते, वे अपने अनुयायी को एक परीक्षा की कसौटी देते हैं, प्रत्येक विचार को उस परीक्षा से जाँचने का आदेश देते हैं। उनकी पाँच परीक्षा इस प्रकार है-

एक- जो-जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव और वेदों से अनुकूल हो, वह-वह 'सत्य' और उससे विरुद्ध 'असत्य' है।

दूसरी- जो-जो सृष्टिक्रम से अनुकूल वह-वह 'सत्य' और जो-जो विरुद्ध है, 'असत्य' है। जो कोई कहे- ''विना माता-पिता के योग से लड़का उत्पन्न हुआ'', वह सृष्टिक्रम से विरुद्ध होने से असत्य है।

तीसरी- ''आप्त'' अर्थात् जो धार्मिक, विद्वान्, सत्यवादी, निष्कपटियों का संग, उपदेश के अनुकूल है, वह-वह 'ग्राह्य' और जो-जो विरुद्ध है, वह-वह 'अग्राह्य' है।

चौथी- अपने आत्मा की पवित्रता, विद्या के अनुकूल अर्थात् जैसा अपने को सुख प्रिय और दु:ख अप्रिय है, वैसे सर्वत्र समझ लेना कि मैं भी किसी को दु:ख वा सुख दूँगा, तो वह भी अप्रसन्न और प्रसन्न होगा।

और पाँचवीं- आठों प्रमाण अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव से।

सबसे विलक्षण बात है आस्था और धर्म जैसे क्षेत्र में प्रजातन्त्र पद्धति का समावेश करना। प्राय: मनुष्य अपनी श्रद्धा और विश्वास के अनुसार किसी को अपना गुरु बनाता है, सभी शिष्य स्वाभाविक रूप से उसके अनुगामी होते हैं। गुरु अपने पीछे गुरु की नियुक्ति करता है। परन्तु स्वामी जी धार्मिक संस्था में गुरु परम्परा के स्थान पर प्रजातन्त्र प्रणाली की व्यवस्था के पक्षधर हैं। बहुतों के विचार से यह परम्परा सफल नहीं मानी जा सकती परन्तु मनुष्य की बनाई कोई भी परम्परा क्यों न हो वह शत-प्रतिशत सफल नहीं हो सकती। गुरु परम्परा, राज परम्परा, कुल परम्परा सभी में भी दोष हैं। अत: प्रजातन्त्र प्रणाली में भी दोष हो यह संभव है, यह स्वाभाविक है परन्तु प्रजातन्त्र प्रणाली एक मात्र ऐसी प्रणाली है जिसमें अन्तिम व्यक्ति को प्रथम स्थान पर आने का अधिकार और अवसर उपलब्ध है। अन्य परम्पराओं में योग्यता, गुणों के लिए कोई स्थान नहीं है। इस गुरुड़म को दूर करने के विचार ने ही सामाजिक धार्मिक संगठन में स्वामी जी ने प्रजातन्त्र प्रणाली को स्थान दिया। यह स्वामी जी की विलक्षणता है।

स्वामी जी की विक्षणता एक और बात में है, वह है सब को वेद के अध्ययन का अधिकार देना। भारतीय संस्कृति में अध्ययन और वेद भिन्न नहीं है। हम अपने बालक का जिस दिन विद्या प्रारम्भ करते हैं उस संस्कार को वेदारम्भ संस्कार कहते हैं। अध्ययन का उद्देश्य मनुष्य जीवन के प्रयोजन को पूर्ण करना है। वह वेद के अध्ययन से सम्भव है। वेद के अनुसार जीवन चलाने से मनुष्य जीवन के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है। अत: हमारे जीवन में ओत-प्रोत है उसे किसी मनुष्य से पृथक् नहीं किया जा सकता, किसी मनुष्य को अध्ययन से, विद्या के पढ़ने से, वेदाध्ययन से रोकना इसी प्रकार का अपराध और पाप है जैसे किसी को भोजन या पानी न देकर भूखा-प्यासा मार देना। जिन लोगों को जन्मगत जाति और लिङ्ग के आधार पर विद्या के अध्ययन से, वेद के स्वाध्याय से वञ्चित किया गया था, स्वामी दयानन्द ने उनके अधिकार को लौटाया और उनके शिष्यों में लम्बी परम्परा है जिन्होंने स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ाया। ऋषि ने वेद को ईश्वरीय ज्ञान बताते हुए जैसे ईश्वर के बनाये हवा, पानी, अन्न, स्थान पर सबका अधिकार माना है उसी प्रकार ईश्वरीय ज्ञान वेद पर भी मनुष्य मात्र का अधिकार घोषित किया है। ऋषि कहते हैं जैसे एक पिता की सम्पत्ति में सभी सन्तानों का बराबर अधिकार होता है उसी प्रकार मनुष्य मात्र का वेद पर समान अधिकार है।

जिन लोगों ने वेद को अपने अधिकार में लेकर शेष समाज को वञ्चित कर दिया था स्वामी जी ने उनके अभेद्य दुर्ग को धराशायी कर दिया। जिन ग्रन्थों और मान्यताओं के आधार पर वेदाध्ययन के अधिकार से लोगों को वञ्चित किया जाता उन सभी तन्त्रग्रन्थों का मिथ्यात्व प्रतिपादन कर उन्हें वेद परम्परा से बहिष्कृत करने की घोषणा कर दी, उन सब ग्रन्थों को अप्रमाण मानकर अमान्य कर दिया जो मनुष्य के अधिकार को सीमित करते थे। जिन प्रमाणिक ग्रन्थों में स्वार्थी लोगों ने मिलावट कर दी थी स्वामी जी ने प्रक्षिप्त बताकर निरस्त कर दिया। कसौटी के रूप में जो-

जो वेद कहता है और वेदानुकूल है वही मान्य अन्य को अमान्य घोषित कर दिया। वैदिक साहित्य के अतिरिक्त उन वेद भाष्यों को भी स्वामी जी ने प्रमाण कोटि से बाहर कर दिया जो वैदिक सिद्धान्तों से विपरीत आशय रखते थे।

इस प्रकार के साहित्य की परीक्षा के लिए स्वामी जी को अपने गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द जी से एक कसौटी मिली थी जिसका नाम है आर्ष। जो आर्ष है ऋषि प्रोक्त है, वह ग्राह्य है जो ऋषियों और वेद के मन्तव्य से विपरीत है वह सब अनार्ष होने से त्याज्य कोटि में है। यह आर्ष-अनार्ष की कसौटी वेद भाष्य और वैदिक साहित्य की वेदानुकूलता और विरोध को समझने का सबसे बड़ा साधन है।

ऋषि दयानन्द की एक और विलक्षणता है सब को यज्ञ का अधिकार देना। जैसे जन्मजात ब्राह्मणों ने वेदों को अपनी रूढ़ियों के जाल में बान्ध रखा था उसी प्रकार यज्ञ को भी कठोर रूढ़ियों, अनुचित परम्पराओं और भ्रष्ट कर्मकाण्ड के माध्यम से अपने पञ्जों में जकड़ रखा था। उसे ऋषि ने मुक्त कर जैसे वेद पढ़ने का अधिकार सब को दिया उसी प्रकार यज्ञ करने का अधिकार भी मनुष्य मात्र को दिया। स्वामी जी ने यज्ञ को जीवन का अनिवार्य अभिन्न अंग बता कर उसको इतना सहज और सरल कर दिया जैसे किसी मनुष्य का भोजन करना अनिवार्य और सरल कार्य है।

यज्ञ को पण्डितों ने इतना कठिन बना दिया था कि कोई व्यक्ति यज्ञ-हवन करने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। उसका विधि विधान पण्डित दक्षिणा सब मिलाकर केवल यह राजे-महाराजे, सेठ-साहूकारों का होकर रह गया था। यज्ञ के कल्पित फल बताकर और उल्टे-सीधे कार्य कराकर धन लूटना ही यज्ञ का प्रयोजन रह गया था। यज्ञ में हिंसा, व्यभिचार का बोलबाला था। स्वामी जी ने इस जंजाल को जड़ से उखाड़कर फैंक दिया। इस प्रकार यज्ञ को मनुष्य को शान्ति देने वाला, पर्यावरण की शुद्धि करने वाला, ज्ञान-विज्ञान में रुचि उत्पन्न करने वाला सब के करने योग्य कार्य बना दिया। स्वामी जी ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के कर्मकाण्ड विषयक प्रकरण में एक ऐसा निर्देश दिया है जिससे समस्त यज्ञीय पाखण्ड की जड़ ही उखड़ जाती है। वे लिखते हैं-

यज्ञे यद् यद् आवश्यकं तत् तत् कर्त्तव्यं नेतरत्।

अर्थात् यज्ञ करते हुए यज्ञ को सफल बनाने के लिए जो-जो करना आवश्यक और उपयोगी है वही यज्ञ की विधि है। शेष करने की कोई आवश्यकता नहीं। यज्ञ में समिधा कैसी हो यह बता दिया, साकल्य क्या हो? मन्त्र कौन-से हो? कौन-सी क्रिया करनी है? यह सब बताया जो यज्ञ के लिए आवश्यक है और यज्ञ का प्रयोजन सिद्ध करने के लिये उपयोगी है। परन्तु पाप होगा इस प्रकार के डर से यज्ञ ही छोड़ देने की बात स्वामी जी ने यज्ञ करने वालों के मन से निकाल दी। स्वामी जी ने एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण यज्ञ के सम्बन्ध में अपनाया। रूढ़ि वहीं तक स्वीकार है जहाँ तक वह प्रयोजन सिद्ध करने में सहायक है। ऋषियों ने यज्ञ का उपदेश लोगों की आत्मा जगाने के लिए दिया है। यज्ञ बाहरी के कार्य सांसारिक प्रयोजनों की सिद्धि करते हुए आत्मा को जगाने का उद्देश्य पूरा करते हैं। यज्ञ एक समूह में किया जाने वाला कार्य है अत: उसमें व्यवस्था व नियमों की आवश्यकता है। यज्ञ की व्यवस्था यज्ञ को अधिक उपयोगी, सुन्दर और सरल बनाती है। यदि यह रूढ़ि पाप का कारण बने तो इसे कौन करना चाहेगा। आचमन दायें हाथ से करने के स्थान पर बायें से करने पर पाप नहीं होता। किसी के दायाँ हाथ है ही नहीं तो बायें से ही करेगा, नियम व्यवस्था सरल सुन्दरता के लिए है पाप और पुण्य से इनका कोई सम्बन्ध नहीं। इस प्रकार यज्ञ पण्डितों, शास्त्रों, रूढ़ियों से निकल कर स्वामी दयानन्द की कृपा से सब के लिए हो गया। नियमों का ध्यान रखते हुए स्वामी दयानन्द का प्रमुख नियम यज्ञ सबके लिए इसका ध्यान रखने से जटिलताओं से बचा जा सकता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के सब उपकारों में दो महान् उपकार हैं, वेद पढ़ने का अधिकार और दूसरा यज्ञ करने का अधिकार। इस प्रकार वे वेद हमें ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार देता है तथा यज्ञ कार्य के करने का अधिकार देता है। वेद श्रेष्ठ ज्ञान और यज्ञ श्रेष्ठ कर्म के प्रतीक हैं। ऋषि दयानन्द ने मनुष्यों के श्रेष्ठ ज्ञान कर्म से वञ्चित करने वाले बन्धनों को तोड़ कर जो बौद्धिक व कर्म करने की स्वतन्त्रता प्रदान की इसके लिए पं. लोकनाथ तर्क वाचस्पति की महर्षि महिमा पुस्तक की यह पंक्ति बड़ी सटीक बैठती है-

सर्वैषाकरुणा विवेकजलधे:
स्वामी दयानन्द की।

यह स्वामी दयानन्द की दया है हम वेद पढ़ सकते हैं, यज्ञ कर सकते हैं।

- धर्मवीर

परमेश्वर की कृपा, उपासना, सृष्टि की विद्या वा अपने पुरुषार्थ के साथ वर्तमान हुए मनुष्यों को विद्वानों के मार्ग की प्राप्ति और उस में सुख होता है और आलसी मनुष्यों को नहीं होता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.३३

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण..........

मन को बदलना सीखें

-स्वामी विष्वङ्

कार्य-जगत् में प्रत्येक कार्य-पदार्थ में तीन स्वभाव होते हैं। सत्व-गुण का शान्त स्वभाव, रजोगुण का चंचल स्वभाव और तमोगुण का मूढ़ स्वभाव। इन तीनों स्वभावों से रहित कोई कार्य-पदार्थ नहीं है। हाँ कुछ पदार्थों में परमेश्वर ने कुछ स्वभावों को निश्चित रूप में उद्बुध (=प्रकट) करके रखा है और उनका नियन्त्रण परमेश्वर स्वयं करते हैं। उदाहरणार्थ अग्नि है, जिसका स्वभाव उष्ण है और सदा उष्ण को प्रकट करके रखता है। हाँ जहाँ-जहाँ अग्नि-पदार्थ अप्रकट (=अनुद्बुध) रहता है वहाँ-वहाँ अग्नि का उष्ण स्वभाव भी अप्रकट रहता है। परन्तु जब-जब अग्नि प्रकट रहती है तब-तब उष्णता भी प्रकट रहती है। ऐसा नहीं होता कि अग्नि तो प्रकट हो जाये पर उष्णता अप्रकट रहे। इस प्रकार अनेकों पदार्थ हैं, जिनके स्वभावओं का नियन्त्रण ईश्वर के अधीन है। परन्तु परमेश्वर निर्मित कुछ ऐसे पदार्थ भी हैं, जिनका नियन्त्रण जीवात्मा-मनुष्य के अधीन भी होता है। उन पदार्थों में मन एक महत्त्वपूर्ण पदार्थ है।

यद्यपि मन में तीनों (शान्त, चंचल व मूढ़) स्वभाव रहते हैं और परमेश्वर ने मन को शान्त प्रधान स्वभाव वाला बनाया भी है। परन्तु मन सदा शान्त स्वभाव वाला नहीं रहता है। यदि मन पूर्ण रूप से परमेश्वर के अधीन होता, तो हो सकता था कि मन सदा शान्त रहे। परन्तु मन पूर्ण रूप से ईश्वर के अधीन नहीं रहता। परमेश्वर ने मन को जीवात्मा के अधीन कर रखा है। इसलिए जीवात्मा अपने अधीन मन को अपने अनुसार चलाता है। इसी कारण मन कभी शान्त दिखाई देता है, तो कभी चंचल दिखाई देता है और कभी मूढ़ भी दिखाई देता है। यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वह मन को शान्त बनाये रखे या चंचल या मूढ़। यदि मनुष्य को इस बात का पता चल जाये कि मन को जिस स्वभाव वाला बनाना हो उस स्वभाव वाला बनाया जा सकता है और वह भी स्वयं के हाथों में है। इस बात को कैसे माना जाये कि मनुष्य स्वयं मन को शान्त, चंचल या मूढ़ बना सकता है? इसका समाधान सरल है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति कभी चंचल, तो कभी शान्त, कभी मूढ़ भी रहता है। यह सभी को प्रत्यक्ष है।

यह नहीं हो सकता कि कोई सदा ही चंचल, शान्त या मूढ़ रहता हो, ऐसा सम्भव नहीं है। यह अनुभव सभी करते हैं कि एक ही स्वभाव में सदा कोई नहीं रहता। इसका तात्पर्य यह है कि मन का स्वभाव बदलता रहता है। यदि मन का स्वभाव बदलता रहता है, तो कोई न कोई बदलने वाला होना चाहिए। ईश्वर ने मन को जीवात्मा के अधीन कर रखा है। ऐसी स्थिति में ईश्वर बदलने वाले नहीं हैं। ईश्वर से भिन्न चेतन तत्त्व जीवात्मा ही है, इसका अर्थ यह हुआ कि जीवात्मा ही मन के स्वभाव को बदलने वाला है। मनुष्य इस बात को अनुभव नहीं कर पा रहा है कि मन चंचल है, तो उसे चंचल मैंने बनाया, मन मूढ़ है, तो उसे मूढ़ मैंने बनाया या मन शान्त है, तो उसे शान्त मैंने बनाया। मनुष्य इस बात को जिस दिन विवेकपूर्वक जानेगा, उसी दिन से मन को जिस स्वभाव वाला बनाना वह चाहता है मन भी उसी स्वभाव वाला बन जायेगा। यहाँ इतना अवश्य जानना होगा कि मन क्या है? मन में कितने स्वभाव हैं? क्या-क्या स्वभाव हैं? मन के स्वभाव कैसे बदलते हैं? आदि-आदि।

संसार में कोई चंचल दिखाई दे रहा है, तो वह चंचल इसलिए है कि उसने मन को चंचल बनाया। यहाँ यह प्रश्न उपस्थित होगा कि उसने मन को चंचल ही क्यों बनाया, शान्त या मूढ़ क्यों नहीं? यहाँ इसका समाधान यह है कि मनुष्य में पिछले जन्मों के अनगिनत संस्कार रहते हैं, उन संस्कारों में चंचलता के भी संस्कार रहते हैं। वर्तमान जन्म के भी संस्कार हैं और वर्तमान परिवेश-माहौल में जिन-जिन लोगों के साथ वह रहता है, उनका ज्ञान व अज्ञान का प्रभाव पड़ता है। उसके साथ रहने वाले जिस प्रकार के कार्यों को करते हैं, उनका भी प्रभाव पड़ता है और उसे जो ज्ञान, अज्ञान अन्यों के द्वारा शिक्षा के रूप में प्राप्त हो रहा है, उसका भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। इन (पूर्व संस्कार, वर्तमान संस्कार, वर्तमान के कार्य, ज्ञान, अज्ञान) सभी कारणों के आधार पर मनुष्य अपने मन को बदलता रहता है। पूर्वोक्त कारणों से स्पष्ट होता है कि मनुष्य चंचल इसलिए दिखाई दे रहा है क्योंकि वह चंचलता वाले संस्कारों से प्रेरित हुआ है, चंचल इसलिए दिखाई दे रहा है क्योंकि वर्तमान में चंचल हो कर कार्य करने वालों को देख कर प्रभावित हो रहा है, चंचल इसलिए दिखाई दे रहा है क्योंकि वर्तमान परिवेश ने उनको चंचल होने की जानकारी दी है।

यहाँ पर यह नहीं समझना चाहिए कि उसे एक ही प्रकार का परिवेश मिला हो, एक ही प्रकार का ज्ञान मिला

हो या एक ही प्रकार के संस्कार हों। हाँ सभी को सभी प्रकार के परिवेश, संस्कार, ज्ञान प्राप्त हुए हैं। परन्तु जो व्यक्ति जिन संस्कारों से अधिक प्रेरित होता है, वे ही संस्कार अधिक उभरते हैं। जिस परिवेश में अधिक रहता है, उसी परिवेश को अपनाने की चेष्टा करता है। शिक्षा के रूप में जिस ज्ञान या अज्ञान को अधिक ग्रहण करता है, उसी के आधार पर जीवन जीना चाहता है। इसलिए जो व्यक्ति हमें चंचल दिखाई दे रहा है, वह इसी कारण चंचल दिखाई दे रहा है, क्योंकि उसने चंचलता के संस्कारों, परिवेश, कार्यों और अज्ञान से प्रेरित होकर अपने-आपको चंचल बनाया है। यहाँ इस बात को अच्छी तरह समझना चाहिए कि मन जड़ होने से स्वयं चंचल नहीं बनता, उसे चंचल बनाने वाला चेतन जीवात्मा है।

जब मनुष्य को इस बात का बोध होता है कि मन अपने-आप चंचल, मूढ़ या शान्त नहीं होता, उसे तो हम अर्थात् जीवात्माएँ चंचल आदि बनाती हैं। तब मनुष्य मन को अपनी चाह के अनुरूप बना लेता है। प्राय: मनुष्य मन के कारणों, स्वभावों आदि को जाने बिना ही मन को चलाने का प्रयत्न करता रहता है। ऐसा प्रयत्न व्यर्थ ही हो जाता है, क्योंकि जिस पदार्थ से व्यवहार करना है, उस पदार्थ को जाने बिना ही उसका उपयोग लिया जा रहा है। जाने बिना तो उपयोग में लिया जा सकता है, परन्तु उतना लाभ नहीं लिया जा सकता है जितना लाभ जान कर लिया जाता है। इसलिए आध्यात्मिक व्यक्ति का कर्त्तव्य बनता है कि वह मन को जाने, समझे और उसे उचित उपयोग में लाना सीखे। तभी अध्यात्म-मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

ऋषि उद्यान में अब संस्कृत सीखने का अवसर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में अब सभी आर्य-जनों के लिए देव भाषा=संस्कृत-भाषा सीखने का अवसर उपलब्ध है। यह प्रशिक्षण नि:शुल्क होगा। संस्कृत-भाषा को सीखने के इच्छुक शीघ्र सम्पर्क करें।

-: सम्पर्क :-

डॉ. निरञ्जन साहू,

दूरभाष - ०९४१४७०९४९४

उपाध्याय भैरुलाल,

दूरभाष - ०९८२९१७६४६०

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर, राजस्थान

ओ३म्

१३०वाँ बलिदान-समारोह

ऋषि-मेला

इस वर्ष प्रतिवर्ष की भाँति ऋषि बलिदान समारोह का समारोह कार्तिक शुक्ला षष्ठी से अष्टमी संवत् २०७० तदनुसार ८, ९, १० नवम्बर, शुक्रवार, शनिवार, रविवार २०१३ को ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ गुजरात के प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न होगा।

इस अवसर पर ऋषि उद्यान में जीर्णोद्धार के पश्चात् बनी भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन समारोह भी होगा।

स्वामी दर्शनानन्द बलिदान शताब्दी मनायी जायेगी।

आर्यसमाज के वैदिक विद्वान्, कार्यकर्ता, आर्य पाठविधि की सेवा करने वाले आचार्य, वेदपाठी, ब्रह्मचारियों का सम्मान किया जायेगा।

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष निरन्तर २६ वर्ष से सम्पन्न हो रही वेदगोष्ठी में अनेक विद्वानों के पत्र वाचन होंगे, इस वर्ष वेदगोष्ठी का विषय 'वेद और सत्यार्थप्रकाश का १२वाँ समुल्लास' होगा।

इस समारोह में अधिक से अधिक संख्या में सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधारकर धर्म लाभ उठायें।

मुक्त हस्त से आर्थिक सहयोग कर सभा के कार्यों की अभिवृद्धि में सहयोगी बनें।

कुछ तड़प-कुछ झड़प

- राजेन्द्र जिज्ञासु

वैदिक दर्शन का प्रभाव और आर्यसमाजः- परोपकारी के अगस्त द्वितीय २०१३ के अङ्क में हमने 'उपाध्याय जी की एक पीड़ा' तथा 'सर सैयद अहमद खाँ ने सत्य को जाना व माना' इन दो बिन्दुओं पर कुछ ठोस सप्रमाण सामग्री दी थी। धर्मानुरागी पाठक इन्हें पुनः एक बार पढ़ें। श्रद्धेय पं. गंगाप्रसाद जी की यह पीड़ा हमें साहित्य पिता से बपौती में प्राप्त हुई है कि आर्यसमाज के अधिकांश कर्णधारों अथवा अधिकारियों ने महर्षि दयानन्द को एक सुधारक के रूप में तथा आर्यसमाज को मात्र एक सुधारवादी संस्था के रूप में ही संसार के सामने रखा है। महर्षि के लिए मुख्य तो वेद था। आर्यसमाज के ऐसे अधिकारियों की दुर्नीति का दुष्परिणाम यह सामने आया है कि देश तथा विश्व के लेखकों ने महर्षि दयानन्द को दार्शनिक के रूप में वह महत्त्व नहीं दिया जो देना चाहिये था। उनकी चर्चा योगी, ऋषि, विचारक, दार्शनिक के रूप में जब समाज ही नहीं मानता तो साहित्यकार व प्रकाशक इधर ध्यान क्यों दें?

ऐसा नहीं कि आर्यसमाज में किसी का इधर ध्यान गया ही नहीं। आचार्य रामदेव जी तथा मेहता जैमिनि जी के लेखों व व्याख्यानों की तान ही ऋषि दयानन्द के वैदिक दर्शन पर टूटा करती थी। उनकी इस शैली को इस सेवक ने अपनाया। एक बार मान्य शरर जी ने कहा था कि जिज्ञासु जी ने मेहता जैमिनि जी की इस परम्परा को आगे बढ़ाया है। गत आधी शताब्दी से अधिक समय से हम इस कर्त्तव्य को निभा रहे हैं।

आर्यसमाज कटरा प्रयाग ने हमें श्रीयुत् वियोगी हरि जी द्वारा सम्पादित 'हमारी परम्परा' भेंट किया। वियोगी जी ने इस ग्रन्थ में सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर लिखित एक सुन्दर लेख 'आर्यसमाज' दिया। हमारा वियोगी जी तथा विष्णु प्रभाकर जी दोनों से मिलना-जुलना रहा। वियोगी जी आर्यसमाज द्वेषी नहीं थे, आर्य विष्णु प्रभाकर जी आर्य परिवार के ही रत्न थे। आप हिसार के बाबू प्यारेलाल जी के भांजे थे और उन्हीं की छत्रछाया में पले व बढ़े। बाबू जी के आर्यत्व की आप पर गहरी छाप थी।

आपके लेख में एक वाक्य हमें जंचा नहीं। यह सोच भ्रामक है। आर्यसमाजी बाबूओं के कारण गम्भीर विचारक विष्णु प्रभाकर भी कुछ भ्रमित हो गये लगते हैं। आपने लिखा है, ''दर्शन के क्षेत्र में आर्यसमाज का योगदान इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है। जितना सुधार के क्षेत्र में। उसने अन्धविश्वासों पर गहरी चोट की।[१]''

अच्छा होता यदि इसकी बजाय यह लिखा जाता कि ''दर्शन के क्षेत्र में आर्यसमाज के योगदान के महत्त्व का ठीक-ठीक नहीं आंका जाँचा गया। हम गत तीस चालीस वर्षों से यह लिखते चले आ रहे हैं कि पूरे विश्व में और सब बड़े-बड़े मत पन्थों आर्यसमाजी दार्शनिकों ने वैदिक दर्शन और आर्य सिद्धान्तों की अमिट व गहरी छाप लगाई है। दुर्भाग्य से उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय सुधारकों के नाम की माला फेरने वाले आर्यसमाजी बाबुओं ने भी इस प्रभाव को न तो आप समझा और न औरों को कभी इस योगदान की जानकारी दी। लीजिये नीचे दिये कुछ बिन्दु पढ़िये, औरों को बताइये और कहिये कि क्या यह आर्य सामाजिक दर्शन का योगदान नहीं है?

१. इस्लाम के मूर्धन्य लेखक यह मान रहे हैं कि ईश्वर प्रतिपल न्याय करता है। Day of Judgement (कयामत के दिन न्याय) की मान्यता कहाँ गई?

२. शैतान का ख़ारिजी वजूद (बाहरी सत्ता) अब कहाँ है। सर सैयद शैतान को भीतर (पाप का कर्त्ता मनुष्य आप) मान रहे हैं।

३. ईश्वर कभी पाप क्षमा नहीं करता।

४. अल्ला का दायाँ बायाँ कुछ नहीं, वह सर्वव्यापक है।

५. ''अल्लाह चाहे भी तो हमें नहीं छोड़ सकता'' सर सैयद अहमद ख़ाँ। ईश्वर हाज़िर नाज़िर (सर्वव्यापक) है, यह किस की कृपा का फल है?

६. ईसाई पूर्व जन्म व पुनर्जन्म में विश्वास करने लगे।

७. the art of life in bhagwadgita में विद्वान् लेखक दवे ने स्पष्ट माना है कि वेद, उपनिषद् में मूर्त्तिपूजा नहीं।

८. सामसंस्कार भाष्य के पौराणिक भाष्यकार ने ऋषि की वेद भाष्य शैली को स्वीकार किया या नहीं?

९. Hymms from the rigveda के अमरीकन लेखक ने महर्षि दयानन्द की वेद भाष्य शैली अपनाई या नहीं?

१०. the secret teachings of the vedas के अमरीकन लेखक stephen knapp तथा the call of the vedas के भारतीय लेखक सदृश सैंकड़ों लेखकों, विद्वानों ने चार संहिताओं को ही मूल वेद ग्रन्थ माना या नहीं?

११. चमत्कारों को सब मत पन्थों के विचारकों व वैज्ञानिकों ने मिथ्या विश्वास घोषित किया या नहीं?

१२. ईसाई मुसलमान पूरे विश्व में पृथ्वी आदि ग्रहों-उपग्रहों का तीव्र गति से घूमना मानने लगे या नहीं? कभी मौलाना सना उल्ला जी ने सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका की इस मान्यता (ग्रहों की गति) के खण्डन में पुस्तकें लिखीं थीं या नहीं?

१३. अब काशी में कौन परमात्मा के मुख से ब्राह्मण की उत्पत्ति मानता है?

१४. ईसा कुमारी माँ से जन्मे थे यह मान्यता अब न इस्लाम की है और न ईसाइयों की। यह पं. लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द की दिग्विजय है या नहीं? सर सैयद ने तो **इस विषय में तर्क ही पं. लेखराम जी से उधार लिये या साभार लिये हैं।**

१५. ईसाई व मुसलमान देशों में अब कौन Matter (प्रकृति) की उत्पत्ति मानता है। सब विश्वविद्यालयों में प्रकृति uncreated है, पढ़ाया जा रहा है। धर्म ग्रन्थों के प्रमाण क्या देवें?

१६. इस्लाम में घोषणा कर दी गई है कि धर्म अनादि है, नित्य है। इसका विकास नहीं होता।

हमारे ग्रन्थ 'कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में' इन बातों के अनेक प्रमाण विरोधियों व विधर्मियों के ग्रन्थों से हमने दिये हैं। आर्यसमाजी न पढ़ावें, न पढ़ें तो क्या किया जावे? हमारे मान्य विष्णु प्रभाकर जी रहे नहीं। होते तो हम उनका भ्रम भञ्जन करते। संस्थावाद के कीच बीच फंसे आर्यसमाजी बाबू पं. लेखराम जी, स्वामी दर्शनानन्द जी, पं. रामचन्द्र जी, पं. शान्ति प्रकाश का पुण्य प्रताप क्या जानें?

अजमेर से सोनी जी का पत्रः- अजमेर के एक प्रबुद्ध आर्य श्री बाबूलाल जी की 'तड़प-झड़प' पर प्रतिक्रिया प्राप्त हुई। आपने राधा स्वामी गुरु श्री शिवव्रत लाल की पुस्तक के प्रमाणों से राधा स्वामी मत वालों के दुष्प्रचार का प्रतिकार करने पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए हमारे पुरुषार्थ को सार्थक बना दिया है। ऐसे ही औरों के कई पत्र मिले। तड़प-झड़प पढ़-पढ़कर आर्य बनने वाले उच्च शिक्षित हमें मिले। यह हमारा सौभाग्य।

सोनी जी ने लिखा है कि शिवव्रत लाल जी की सन् १९०३ में महात्मा हंसराज से भेंट का उल्लेख हो जाता तो अच्छा होता। सोनी जी 'महर्षि का सम्पूर्ण जीवन चरित्र' पढ़ेंगे तो गद्‌गद् होंगे। हम तड़प-झड़प में क्या-क्या दें? हमने शिवव्रत लाल को बहुत पढ़ा है। उनके बारे में बहुत कुछ सुना है। वह आर्य गज़ट के सम्पादक रहे, बरेली रहे- ये सब बातें हम जानते हैं परन्तु वह हृदय से कभी भी वैदिक धर्मी नहीं बने। ऋषि के प्रशंसक थे और उनसे प्रभावित भी थे। आलोचक भी बने। महर्षि को 'वेद पशु' तक लिख डाला परन्तु बेजोड़ ब्रह्मचारी, अद्वितीय निडर, सत्य वक्ता और बेजोड़ त्यागी भी माना है।

वह १९०३ ई. में ही नहीं सन् १९०७ में लाला लाजपतराय जी के निष्कासन के समय अग्नि परीक्षा काल में भी आर्यसमाज में थे। तब आपने महात्मा मुंशीराम जी द्वारा लाला लाजपतराय के पक्ष में निडरतापूर्वक छेड़े गये आन्दोलन का खुलकर समर्थन किया। आपने तब श्री महात्मा हंसराज को परामर्श दिया था कि वह भी लाला जी के समर्थन में कुछ लिखें व बोलें। महात्मा मुंशीराम जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सरकार से टक्कर लेने को कहा परन्तु महात्मा हंसराज और सारा डी.ए.वी. परिवार गवर्नर से मिलकर सरकार को अपनी अखण्ड भक्ति का विश्वास दे चुके थे।

श्री सोनी जी ने यह बात छेड़ी है तो हमें इतिहास की परतों के नीचे दबे पड़े ये तथ्य प्रकाश में लाने पड़ गये। श्री शिवव्रत जी के साहस की हम प्रशंसा ही करेंगे कि तब आपने लालाजी के पक्ष में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मासिक 'आर्य मुसाफ़िर' में एक अच्छा लेख दिया था। यह लेख हमारे पास सुरक्षित है। सब कुछ परोपकारिणी सभा को समय आने पर सौंप देंगे। यह अलभ्य स्रोत हम बेचेंगे नहीं। महात्मा हंसराज तब शिवव्रतलााल जी की, महात्मा मुंशीराम जी की सीख मान लेते तो उनकी प्रतिष्ठा बढ़ जाती परन्तु उनमें सरकार से टकराने तथा संघर्ष करने का वह साहस था ही नहीं जो महात्मा मुंशीराम जी, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द जी, महात्मा नारायण स्वामी जी तथा महाबलि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी में था।

चाँदापुर शास्त्रार्थ की एक पूरक घटनाः- श्री श्यामकिशोर जी सिद्धान्तशास्त्री प्रधान चौक आर्यसमाज के दबाव में हमें अनेक कार्य रोक कर प्रयाग जाना पड़ा। वह गुरु भाई हैं, उनकी सुननी पड़ी। साथ ही कुछ खोजने के कार्य भी थे। कुछ-कुछ सफलता मिली। कई प्रकार की ठोस जानकारियाँ लेकर लौटा। वहाँ लखनऊ से श्री पं. नेमप्रकाश जी एक अनुभवी सुयोग्य भजनोपदेशक मिले। उनके भजन सुनकर हमने पूछा, ''आप वैदिक धर्मी कैसे बने?'' वह गर्व से बोले, ''हमारी पाँचवी पीढ़ी वैदिक धर्मी है। मैं चौथी पीढ़ी में हूँ। मेरे परदादा श्री जानकी प्रसाद जी तिवाडी ने महर्षि के दर्शन किये। उनकी भव्य मूर्ति को देखा, सँवाद किया और दृढ़ आर्य बनकर ग्राम लौटकर आर्यसमाज स्थापित कर दिया।''

कहाँ और कब ऋषि दर्शन किये? हमने अगला प्रश्न किया। उन्होंने सोत्साह बड़े जोश से कहा, चाँदापुर के मेले में मेरी परदादी तथा परपितामह ने महर्षि का शास्त्रार्थ सुना। ऋषि के तेज, गर्जती आवाज, प्रबल तर्कों को सुनकर

मेरे परदादा ने मेरी परदादी से कहा, साधु बात तो खरी कहता है परन्तु मूर्तिपूजा का विरोध करता है, यह ठीक नहीं।'' दो दिन में शास्त्रार्थ समाप्त जो हुआ और पादरी तथा मौलवी मैदान छोड़कर बिना बताये चल पड़े तो श्रोताओं पर ऋषि का और वैदिक धर्म का गहरा प्रभाव पड़ा।

श्री जानकीप्रसाद महर्षि से कुछ प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए उनके डेरे पर पहुँचे। वह समय ऋषि के सुस्ताने का था। वह एक कमरे में लेटे थे। मुंशी प्यारेलाल जी कमरे के बाहर खड़े थे। पूछा, कैसे आये हो?

श्री जानकीप्रसाद ने कहा, कुछ शङ्काओं का निवारण करने आया हूँ।

प्यारेलाल जी ने कहा, कुछ प्रतीक्षा कीजिये। स्वामी जी थोड़ा विश्राम कर लें।

भीतर से ऋषि जी ने इनकी बात सुनकर मुंशी जी से कहा, इन्हें आने दीजिये। मुंशी प्यारेलाल ने जानकी प्रसाद जी की पत्नी को बरामदे में रुकने को कहा। स्वामी जी स्त्रियों से मिलते नहीं थे। अकेले जानकी प्रसाद को भीतर ले जाकर उनका परिचय करवाया, यह हमारे ग्राम के दामाद हैं। मेले में आ गये आपका शास्त्रार्थ सुनकर कुछ जिज्ञासा लेकर शङ्का समाधान करवाना चाहते हैं।

महर्षि दर्शन की घटना, शास्त्रार्थ सुनकर जो प्रभाव पड़ा- यह सब कुछ जानकी प्रसाद ने ग्राम के आर्यसमाज में लिखा। उनकी पाण्डुलिपि के इन पृष्ठों की प्रतिछाया प्राप्त होने पर परोपकारी में फिर और लिखा जावेगा। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने एक बार हमारे पास ऋषि दर्शन के किसी के संस्मरण पढ़कर बड़ी गम्भीर मुद्रा में भाव विभोर होकर कहा था, ''राजेन्द्र! यह तो मानना पड़ेगा कि महर्षि के तेजस्वी मुखमण्डल का आर्यसमाज के फैलाने में विशेष योगदान रहा है।'' नेमप्रकाश जी ने भी ज़ोर देकर कहा कि पुराने लोग ग्राम में बताते थे कि श्री जानकीप्रसाद आजन्म ब्रह्मचारी ऋषि दयानन्द जी के तेजस्वी मुखड़े, ऊँचे सुडौल शरीर, सिंहगर्जन, निडरता व पवित्र चरित्र का बखान करते थकते नहीं थे। आज चेलियों वाले बाबों ने हिन्दू समाज को कलङ्कित कर दिया है। किस-किस की जान को रोया जावे?

श्री शिवराम पाण्डे तथा विभु जी को सामग्री की खोज में:- देवेन्द्रनाथ जी लिखित ऋषि जीवन में श्री शिवराम पाण्डे प्रयाग की संक्षिप्त चर्चा है। हमारी कई पुस्तकों में उनके महर्षि विषयक कई संस्मरण हैं। महर्षि के सम्पूर्ण जीवन चरित्र में भी उनके द्वारा वर्णित घटनायें मिलेंगी। वह प्रयाग निवासी थे, यह पता हमें बहुत समय के पश्चात् चला। प्रयाग वालों को उनके परिवार का पता लगाने को कहा। उन्हें कुछ-कुछ जानकारी थी। हम गये परन्तु वे लोग किसी से मिलवा न सके। हमारे पास जो उनके लेख हैं, अब सब अनूदित कर छपवा देंगे। वहाँ से तो कुछ मिला नहीं।

हमने इस विशालकाय ग्रन्थ में श्री विद्याभूषण जी 'विभु' की दण्डी गुरु विरजानन्द जी विषयक कवितायें दीं। गुणियों ने उनकी साहित्यिक उत्कृष्ठता की भूरि-भूरि प्रशंसा करके उनकी और-और रचनाओं को प्रकाश में लाने को कहा। हमारा विभु जी से कभी सम्पर्क तो नहीं था परन्तु जानकारी थी। उनके जीवन की सामग्री तथा रचनाओं की खोज में प्रयाग में पर्याप्त भाग दौड़ की। पर्याप्त सफलता मिली। इस कार्य में श्री श्याम किशोर जी प्रधान, माननीय राधेमोहन जी ने बहुत सहयोग किया। हम श्रद्धेय उपाध्याय जी के घर गये। उनके सुयोग्य पौत्र डॉ. विमलेश जी से भेंट करके इस कार्य में सहयोग मांगा। आपसे हमारे घनिष्ठ सम्बन्धों को आर्यजन जानते ही हैं।

आपने पर्याप्त जानकारी और ठोस सामग्री देकर हमें मालामाल कर दिया। पाठक विभु जी के बारे में कुछ जानना चाहेंगे। आप श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी के सगे मामा, विद्वान्, अथक आर्यसमाजी, कवि तथा साहित्यकार थे। हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकारों व कवियों में उनका मान-सम्मान था। वह डी. फिल. (पीएच. डी.) थे। विकलांग होने से मन के अरमान पूरे न निकाल सके। राधे मोहन जी से भी उनकी एक रचना मिल गई। हमारे पास उनका क्या-क्या है? यह समय आने पर सामने आ जावेगा। वहाँ उनके फोटो को प्राप्त करने का प्रश्न भी उपस्थित हुआ। हमने कहा कि चित्र हम खोज चुके हैं। जिन्हें कभी सारा आर्य जगत् जानता था, उस निष्काम ऋषि भक्त को हम उनकी कृतियों के साथ सामने लायेंगे।

स्वामी सत्यप्रकाश जी के कविरूप पर साहित्यकारों ने कुछ विशेष नहीं लिखा। वाह! वाह!! तो बहुत होती रही है। हमारा मानना है कि स्वामी जी को कवित्व अपने पूज्य पिता जी तथा अपने मामा विभु जी से पारिवारिक सम्पदा के रूप में बपौती में प्राप्त हुआ। हमने पूज्य स्वामी जी की भी कुछ बहुत पुरानी रचनायें खोज ली हैं।

महर्षि के शास्त्रार्थ:- पं. लेखराम जी के अगणित उपकारों में से एक यह है कि आपने महर्षि दयानन्द जी के जीवन की घटनाओं का संग्रह करते हुए, महर्षि के शास्त्रार्थों को भी ऋषि जीवन में सुरक्षित कर दिया। कई लेखकों ने पण्डित जी के ग्रन्थ से शास्त्रार्थ तो संकलित कर लिये, उनके सम्पादक भी बन बैठे परन्तु शास्त्रार्थों में क्या लिखा है यह वे समझ नहीं पाए अथवा उन्होंने शास्त्रार्थों को जानने का यत्न ही नहीं किया। प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक कार्य नहीं कर सकता। अपनी-अपनी प्रवृत्ति के अनुसार ही व्यक्ति

किसी कार्य को करने में समर्थ होता है।

परोपकारिणी सभा ने रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित ऋषि के शास्त्रार्थों को आधार बनाकर इन्हें नये सिरे से छपवाया। सभा ने मुद्रण व साज सज्जा का तो बड़ा ध्यान रखा परन्तु शास्त्रार्थ साहित्य के किसी अनुभवी जानकार को दिखाकर ट्रस्ट ने इस ग्रन्थ को न छपवाया। ठाकुर अमरसिंह जी, पं. शान्ति प्रकाश जी अथवा शरर जी इस ग्रन्थ को देख पाते तो यह निर्दोष होता। हमने ऋषि जीवन पर कार्य करते हुए शास्त्रार्थों का तत्कालीन पत्रिकाओं में प्रकाशित वृत्तान्त के साथ मिलान करके देखा तो पं. लेखराम जी के पुरुषार्थ को नमन किया। पं. लेखराम जी के ग्रन्थ में शास्त्रार्थ ठीक-ठीक छपे हैं।

हुगली शास्त्रार्थ में पं. लेखराम जी, श्रद्धेय लक्ष्मण जी तथा 'आर्य दर्पण' मासिक में 'भूदेव मुखर्जी' नाम एकदम ठीक छपा है। मोहनी मोहन दत्त जज शास्त्रार्थ के समय विद्यार्थी थे। वह भी दर्शक बनकर सुन रहे थे। उन्होंने भी यही नाम लिखा है परन्तु भूलवश मुखोपाध्याय जी ने इन्हें भूदेव मुखोपाध्याय लिखा तो हरबिलास जी, भारतीय जी ने भी पं. लेखराम जी के लिखे शुद्ध नाम[२] को ही अशुद्ध बना दिया। पत्र व्यवहार में भी 'भूदेव मुखर्जी' नाम छपा है। पं. लेखराम जी का प्रयास पहला था। अब सभा का ध्यान इधर गया है। शास्त्रार्थों के अगले संस्करण को और दोषरहित छापने का निश्चय प्रशंसा योग्य है।

दो महारोग:- आर्यसमाज में प्रत्येक वक्ता व लेखक के नाम के साथ आचार्य आदि विशेषण लगाने की महामारी के फैलने से समाज का स्तर व साख गिर रही है। कुछ आचार्य यास्क बनकर God के अर्थ G से Generator, O से Operator और D से Destructer बताकर अंग्रेजी पठित बन रहे थे। कुछ अध्ययन, कहीं से पठन-पाठन किये बिना स्वयं को आचार्य घोषित व प्रचारित कर देना अपने व समाज के लिए घातक है। यह ज्ञान घोटाला है। दूसरी महामारी यह है कि पश्चिमी लेखकों, अंग्रेजी पत्रों व पुस्तकों की एक-एक पंक्ति का प्रमाण पाद टिप्पणियों व भाषण में दिया जाता है परन्तु अपने बड़े से बड़े विद्वान् यथा पं. चमूपति जी, श्री पं. मुनीश्वरदेव जी, पं. धर्मभिक्षु जी तथा पं. नरेन्द्र जी का नाम लेने में हीनता समझी जाती है। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज से वीर भगतसिंह के गुरु श्री जयदेव जी विद्यालङ्कार इतिहास लेखन में सहयोग लिया करते थे। आर्यसमाज के स्वयंभू इतिहासकारों ने कभी स्वामी जी का नाम ही नहीं लिया। सिखों के मूर्धन्य विद्वान् प्रिं. गंगासिंह जी तथा प्रिं. भाई श्री जोधसिंह का स्वामी जी के इतिहासकार होने के बारे में मत यहाँ क्या दें?

सदाचार की आर्ष मर्यादा:- बाबों की कृपा से एक प्रश्न तड़प-झड़प के लिये आया है। हमारा निवेदन है कि बड़ौदा की राज माता ने अपना सचिव भेजकर ऋषि-दर्शन व उपदेश श्रवण का समय माँगा। ऋषि ने कहा, "हमारे पास स्त्रियों से मिलने का समय नहीं।" ऋषि मिलते तो प्रचुर माया मिल जाती। स्वामी सर्वानन्द जी घण्डराँ मठ के प्रवेश द्वार के बायें ओर नवनिर्मित औषधालय का कक्ष देखने गये। यह सेवक साथ था। वहाँ श्री देवदत्त जी से पूछा कि रोगी आकर कहाँ बैठेंगे? देवदत्त जी ने कहा, इस कमरे में ६-७ रोगी आकर बैठ सकते हैं।

महाराज बोले, "यदि अकेली स्त्री आये तो क्या वह भीतर बैठकर औषधि लेगी? अकेली महिला को कभी भीतर मत आने देना। ५-७ हों तो भले ही भीतर बैठ जायें अन्यथा बाहर बरामदे में बिठाया जावे। औषधि यहीं लाकर दें। रोगियों को एक-दो हों तो बाहर ही देख जावे। कोई भी भीतर न आवे। हमारी परम्परा यही है। यही सदाचार मर्यादा है। आप्तोपदश देकर हमने प्रश्नोत्तर दे दिया। रास लीला, बाल लीला व आर्ष मर्यादा का भेद समझा दिया है।

टिप्पणी

१. द्रष्टव्य 'हमारी परम्परा' पृष्ठ ५३१

२. द्रष्टव्य पण्डित लेखराम जी का मूल उर्दू ग्रन्थ, पृष्ठ २०३

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

दुष्कर्म की बढ़ती घटनाएँ व उनसे निपटने के अचूक उपाय

- सत्यवान् आर्य

पिछले कुछ वर्षों में दुष्कर्म की घटनाओं में व्यापक वृद्धि हुई है। ऐसा नहीं है कि ये घटनाएँ सिर्फ बड़े शहरों में हुई हों बल्कि देश के तमाम छोटे-बड़े शहरों व ग्रामीण इलाकों में समान रूप से इस समस्या ने पैर पसारे हैं। पिछले वर्ष दिल्ली में हुई 'दामिनी गैंगरेप केस' जैसी घटना के बाद हुई जन समुदाय की व्यापक प्रतिक्रिया से सरकार जागी व उसने इसके विरुद्ध एक सख्त कानून बनाया जिसे क्रिमिनल लॉ (संशोधन) २०१३ का नाम दिया गया। लेकिन कठोर कानून बनने पर भी घटनाओं में पहले की अपेक्षा बढ़ोत्तरी हुई है। इस लेख के माध्यम से हम इस समस्या के कारणों पर विचार करेंगे जिससे इस समस्या का निवारण सम्भव हो सके क्योंकि दर्शनकार के अनुसार-

कारणा भावात् कार्याभावः।

१. विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण की शिक्षा हो:- ऐसी प्रवृत्तियों पर रोक के लिए चरित्र निर्माण की शिक्षा दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि महर्षि मनु के अनुसार 'जन्मना जायते शूद्रः' अर्थात् मनुष्य जन्म से शूद्र अर्थात् मूर्ख, अज्ञानी होता है। वह गुरु के पास रहकर विद्या व सत्य भाषणादि गुणों से सम्पन्न बनता है इसलिए वेद भी कहता है- 'मनुर्भव' लेकिन आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विद्या के नाम पर सिर्फ भौतिक पदार्थों का ज्ञान कराया जाता है। क्या कभी किसी स्कूल या कॉलेज में सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, आत्मा, परमात्मा, व्यवहारादि की शिक्षा दी जाती है। जब कभी न माता-पिता, न गुरु लोग ऐसी शिक्षा देते हैं तो सन्तानों से ऐसी अपेक्षा व्यर्थ है कि वे समाज में गलत व्यवहार नहीं करेंगे। वस्तुतः देश की सभी समस्याएँ यहीं से पैदा होती हैं। आधुनिक व प्राचीन शिक्षा प्रणाली का मूल भेद यही है कि प्राचीन काल में मानव निर्माण पर अधिक बल दिया जाता था आजकल मशीनों के निर्माण पर अधिक बल दिया जाता है। फलस्वरूप आज का युवा भौतिक विज्ञान व तकनीक के बारे में तो गहन जानकारी रखता है लेकिन उसमें यह जानकारी व भाव नहीं है कि मैं समाज में किस प्रकार का व्यवहार करूँ जिससे मैं स्वयं को व समाज को उन्नत बना सकूँ। इसलिए ऐसी घटनाओं व समाज में हो रहे अन्य दुर्व्यवहरों को रोकने के लिए मानव की बुद्धि व मन को नियन्त्रित करना अत्यन्तावश्यक है और वह होगा चारित्रिक शिक्षा से।

२. सख्त कानून बने व उसका अनुपालन हो:- हमारे ऋषियों ने समाज में मानव विकृतियों को नियन्त्रित करने के लिए कठोर नियमों का निर्धारण किया है। मनुस्मृति में भिन्न-भिन्न अपराधों के लिए दिए जाने योग्य कठोर दण्डों का वर्णन आया है। मनु के अनुसार-

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एव अभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः।।

अर्थात् दण्ड ही प्रजा का शासनकर्ता, सब प्रजा का रक्षक, सोते हुए प्रजास्थ मनुष्यों में जागता है इसलिए बुद्धिमान लोग दण्ड ही को धर्म कहते हैं।

कठोर दण्ड से ही मनुष्यों में डर व्याप्त होता है जिससे वे गलत कार्यों में प्रवृत्त नहीं होते। यह ठीक है कि आज भी भारतीय संविधान में कठोर कानून हैं, लेकिन सिर्फ कानून का होना ही पर्याप्त नहीं बल्कि उसका अनुपालन भी अत्यावश्यक है। अयोग्य शासनकर्त्ताओं के होने से कानून व्यवस्था की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई है। भ्रष्टाचार के द्वारा धुण की तरह खाए जा रहे समाज में कठोर कानूनों का महत्त्व उनके अनुपालन के अभाव में समाप्त हो गया है। इसलिए आज के समय की यह आवश्यकता है कि इस प्रकार के अपराधों की समाप्ति के लिए कठोर कानूनों को बनाकर उन्हें लागू भी अवश्य किया जाए जिससे समाज में भय मुक्त वातावरण बन सके।

३. अश्लीलता पर रोक लगाई जाए:- आज जितना मानव अपने को प्रगतिशील घोषित कर रहा है वहाँ उसकी प्रगति का एक पक्ष यह भी है कि उसने अश्लील बोलने में, देखने में, दिखने में, दिखाने में वृद्धि की। एक तरह से अश्लीलता बढ़ाना प्रगति करने का पैमाना बन गया है। दिन-रात टी.वी., इण्टरनेट, समाचार-पत्रादि संचार के माध्यमों द्वारा अश्लीलता को परोसा जा रहा है और उन्हीं संचार के माध्यमों पर दुष्कर्म बढ़ने का रोना रोया जाता है। क्या किसी वृक्ष को खाद-पानी आदि जीवन के लिए आवश्यक तत्त्वों को दिए जाते हुए बढ़ने से रोका जा सकता है? समाज में बढ़ रही अश्लीलता दुष्कर्म की भावना बढ़ाने में खाद-पानी का कार्य करती है। यह संसार का नियम है कि यदि किसी वृक्ष को बढ़ने से रोकना या सुखाना हो तो उसे खाद-पानी-वायु आदि जीवनदायी तत्त्वों की आपूर्ति बंद करनी होगी। ऐसा नहीं हो सकता कि हम वे तत्त्व पौधें को देते रहें और वह नहीं बढ़े। इसलिए दुष्कर्म जैसी प्रवृत्तियों पर रोकथाम के लिए अश्लीलता

आदि की प्रवृत्तियों पर रोक लगाई जानी चाहिए जो कि उनके बढ़ने में सहायता करती हैं।

४. त्वरित न्याय व्यवस्था हो:- आज भारत जैसे देश की न्याय प्रणाली में कई छेद हैं जिनमें से एक है न्याय का देर से मिलना। कई अपराधों को या तो इसलिए छिपा दिया जाता है कि कौन पुलिस के चक्कर में पड़े? या कौन अदालतों के लम्बे चक्कर काटे? या कौन अमुक दबङ्ग व्यक्ति से पङ्गा ले? फिर भी कोई साहस कर अदालतों में गुहार लगाए, तो उसे न्याय पाने के लिए एक लम्बी-चौड़ी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है जो अपराधी को इस बात का पर्याप्त समय व गुंजाइश देती है कि वह सुबूतों के साथ छेड़खानी करे, गवाहों को डरा-धमकाकर उनके बयान बदलवाए। ऐसे कई मामलों में तो न्याय हो ही नहीं पाता और कहीं कभी किसी को धक्के खाकर न्याय मिलता है तो जीवन का अधिकतर भाग गुजरने के बाद वह न मिलने के समान है। वस्तुत: देरी से मिला न्याय, न्याय के साथ अन्याय है। इसलिए भ्रष्टाचार से रहित कड़ी कानून व्यवस्था व त्वरित न्याय व्यवस्था आज की महती आवश्यकता है जिसमें पीड़ित निर्भीक होकर अपनी आवाज उठा सके व शीघ्र न्याय पा सके।

उपर्युक्त वेद सम्मत उपायों को यदि अपनाया जाए तो निश्चित रूप से ऐसे कुकृत्यों पर काफी हद तक लगाम लग सकती है लेकिन इसमें सबसे बड़ी बाधा है समाज में वैसे विचार का अभाव, वैसी इच्छा शक्ति का अभाव। इस अभाव का कारण है ऐसी शिक्षा का अभाव जो मानव को मानव बनाने पर जोर दे। पूर्ण सत्य तो यह है कि जब तक देश में मानव निर्माण करने वाली शिक्षा नहीं होती तब तक देश की सभी समस्याएँ जस की तस बनी रहेंगी क्योंकि आग में घी डाले जाते हुए उसे भड़कने से कोई रोक नहीं सकता, सिर्फ पत्तों को सींचने से पौधे की जड़ में पानी नहीं जाएगा और कमजोर नींव पर बनी इमारत आखिरकार गिरेगी ही इसे दुनियाँ का कोई व्यक्ति नहीं रोक सकता।

- म.नं. ३१०, डिफैन्स कॉलोनी, हिसार, हरियाणा

ई-मेल द्वारा परोपकारी नि:शुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई-मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब-साइट पर तो परोपकारी पहले से ही नि:शुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब-साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई-मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रासायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा। अत: पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई-मेल पता सभा को ई-मेल से भिजवा देवें।** आप जिन इष्ट-मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह नि:शुल्क भेज दी जायेगी।

ई-मेल-psabhaa@gmail.com

-व्यवस्थापक

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

मनुष्यों को ईश्वर की इस सृष्टि में विद्वानों का अनुकरण सदा करना और मूर्खों का अनुकरण कभी न करना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२३

मनुष्यों को परमेश्वर की उपासनायुक्त व्यवहार से शरीर और आत्मा के बल को पूर्ण कर के यज्ञ से प्रजा की पालना और शत्रुओं को जीतकर सब भूमि के राज्य की पालना करनी चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२५

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक स्तर)

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति उपलब्ध नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे। साथ ही पढ़ाये गये विषयों की लिखित परीक्षा व आपके द्वारा पालन किये गये शिविर के अनुशासन का भी आकलन किया जायेगा, इसी आधार पर प्रमाण–पत्र भी दिये जायेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ना होगा।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. [illegible] आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
८. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
९. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मंत्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क ५०० से १५०० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल

कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जाता है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

।।ओ३म्।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में आयोजित १६ से २३ जून २०१३ को योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) लगाया गया। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है। अगला शिविर दिनांक २० से २७ अक्टूबर।

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

---

ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

२४ नवम्बर से १ दिसम्बर, २०१३, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर। अधिकतम संख्या-५०। मात्र पूर्व पञ्जीकृत प्रतिभागियों के लिए। इसमें विद्वद् गोष्ठी द्वारा निर्धारित आर्यसमाज की ध्यान पद्धति का प्रशिक्षण दिया जायेगा व ध्यान करवाने का अभ्यास भी करवाया जायेगा। लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षा के बाद योग्य व्यक्तियों को परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षक-प्रमाण पत्र भी दिये जायेंगे। शिविर शुल्क १००० रु. है। २४ नवम्बर सायं ४ बजे तक पहुँचना अनिवार्य है। विलम्ब से आने वालों की शिविर में सहभागिता नहीं हो पायेगी। शिविर का समापन १ दिसम्बर को सायं ५ बजे तक हो जायेगा। इच्छुक व्यक्ति, कृपया सम्पर्क करें-९४१४००३७५६, समय-मध्याह्न १.३० से २.३०।

पता-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राज. ३०५००१। ईमेल-psabhaa@gmail.com

---

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. ऋषि मेला ८, ९, १० नवम्बर, २०१३।

२. २४ नवम्बर से १ दिसम्बर तक **ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर,** सम्पर्क : ०९४१४००३७५६, समय : मध्याह्न १.३० से २.३० बजे।

आर्यसमाज और वेद प्रचार

- डॉ. महेश विद्यालंकार

''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है'' ऐसा क्रान्तिकारी उद्घोष ऋषि दयानन्द से पूर्व किसी ने नहीं किया। वर्तमान में इतने शंकराचार्य, पन्थ, सम्प्रदाय, महन्त आदि हैं कोई भी वेदों के प्रति ऐसी, मान्यता व धारणा नहीं रखते हैं। ऋषि की महत्त्वपूर्ण विशेषता व देन है- वेदों की ओर लौटो, मेरी नहीं वेदों की मानो। वेदज्ञान ही आज के भूले-भटके, अशान्ति, संघर्ष, हिंसा, भ्रष्टाचार, अनाचार आदि में लिप्त मानव-समाज को सच्चे सुख, शान्ति, प्रसन्नता, निरोगिता, विश्वशान्ति, विश्वबन्धुत्व और विश्वमानवता का मार्ग दिखा सकता है। वेद ज्ञान सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सार्वदेशिक तथा सार्वजनिक है। वेद परमात्मा का आदेश, उपदेश और सन्देश है। वेद ज्ञान इस देश की अद्वितीय सम्पदा है।

आर्यसमाज ऋषि दयानन्द का जीवित-जागृत स्मारक और उत्तराधिकारी है। स्वामी जी के अधूरे स्वप्नों व कार्यों की पूर्ति की जिम्मेदारी आर्य संगठनों, सभाओं, संस्थाओं एवं आर्यसमाज की है। कोई संस्था, संगठन व महापुरुष अमर व जीवित विचारों और सिद्धान्तों से रहता है। ऋषि स्वयं में सिद्धान्त व विचार थे। वेद प्रचार आर्यसमाज को विरासत, वसीयत एवं परम्परा में मिला है। आर्यो! ऋषि का अमर सन्देश गूँज रहा है- वेद-वेद-वेद, वेद प्रचार करो, वेदानुकूल जीवन जीओ, वेद ज्ञान जन-जन तक पहुँचाओ। जितना वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार होगा, उतना संसार से अज्ञान, जड़ता, पशुता, ढ़ोंग-पाखण्ड आदि दूर होंगे। सच्चे अर्थ में मानव, मानव बन सकेगा। वेदों का जीवन-दर्शन जगत् को सीधा-सच्चा एवं सरल मार्ग दिखाता है। आर्यसमाज का मुख्य एजेण्डा वेद प्रचार है, वेद प्रचार घटने के कारण ही, आज अन्धविश्वास, ढोंग-पाखण्ड, जड़ पूजा, गुरुवाद आदि बढ़ रहा है। धर्म, भक्ति और परमात्मा बाजार-व्यापार बन रहे हैं। धर्म के नाम पर अधर्म फैल रहा है। जो आज धार्मिक क्षेत्र में अन्धकार व पाखण्ड फैल रहा है, उसमें आर्यसमाज प्रकाशस्तम्भ की भूमिका निभा सकता है।

कभी आर्यसमाज जागते रहो, जागते रहो, की भूमिका में था। आर्यसमाज का अतीत अत्यन्त प्रेरक, उज्ज्वल, अनुकरणीय, स्मरणीय एवं वन्दनीय रहा है। जितना गर्व-गौरव करें, थोड़ा है। वर्तमान अत्यन्त चिन्तनीय व विचारणीय हो रहा है। सर्वत्र मूल में भूल हो रही है। कहाँ के लिए चले थे? कहाँ जा रहे हैं? जो पहले हमारी साख, विश्वसनीयता, पहचान, सम्मान व आकर्षण था, उसमें तेजी से गिरावट आ रही है। हमारे अनुयायी तेजी से कम हो रहे हैं? दैनिक, साप्ताहिक, वार्षिकोत्सवों, यज्ञ, कथा आदि में उपस्थिति चिन्तनीय हो रही है। उत्सवों पर लोगों को लंगर का प्रलोभन दिखाकर लंगर भीड़ जुटाई जा रही है। पुराने विद्वान्, वक्ता, संन्यासी, भजनोपदेशक, कार्यकर्त्ता, सदस्य, अधिकारी आदि जा रहे हैं, उस तीव्रता से नये लोग नहीं आ पा रहे हैं। पहले भवन कच्चे होते थे, लोग विचारों, सिद्धान्तों, आदर्शों और आचरण से पक्के होते थे। आज उल्टा हो रहा है। भवन पक्के बन रहे हैं लोग जीवन व आचरण से कमजोर हो रहे हैं। तेजी से आर्यसमाज अपने मूल सिद्धान्तों, उद्देश्यों, आदर्शों, विचारों से हट, कट व भटक रहा है। आज आर्यसमाज के भवनों, स्कूलों, संस्थाओं, संगठनों आदि की भौतिक सम्पदा अरबों में है। बाहर का कलेवर लम्बा-चौड़ा है, मगर आन्तरिक दृष्टि से स्थिति गम्भीर व शोचनीय है। जो हमें लड़ाई, संघर्ष, विवाद, अज्ञान, अशिक्षा, ढोंग, पाखण्ड आदि के विरोध में लड़नी चाहिए थी, वह आपस में ही लड़ पड़े। आर्यसमाज को बाहर से किसी ने कमजोर नहीं किया, वह अपनों से ही कमजोर हो रहा है। आपसी स्वार्थ, अहंकार के कारण विवाद व संघर्ष है। इसके मूल में एक मजबूत कारण यह भी है कि हमारे जीवन, विचारों व आचरण में धार्मिकता, आध्यात्मिकता, नैतिकता, तप, त्याग, सेवाभाव आदि की कमी हो रही है। ये बातें जीवन को सम्भालती व सन्तुलित रखती हैं। सन्ध्या व यज्ञ धार्मिक जीवन के आधार हैं। ऋषि का जीवन कह रहा है- भक्ति से शक्ति मिलती है। उन्होंने ईश्वरोपासना कभी नहीं छोड़ी। जो हमारे यज्ञ, कथा, सत्संग व कार्यक्रमों में सात्विकता, धार्मिकता, स्वच्छता, शान्तिमय वातावरण, प्रेरक प्रभाव आदि होना चाहिए, उसका तेजी से अभाव हो रहा है। हमें दूसरों से सीखना चाहिए। आज हमारे कार्यक्रम, जलसा, जलूस, लंगर, फोटो, माला, स्वागत, सम्मान, भाषण, प्रस्ताव योजनाओं आदि तक सीमित हो रहे हैं। क्रियात्मक व प्रेरक जीवन से दूर हो रहे हैं। जो आर्यसमाज कभी दूसरों की शुद्धि करता था, आज उसे सच्चाई व ईमानदारी से अपनी शुद्धि की जरूरत है।

आर्यसमाज की भ्रष्ट, स्वार्थ, पदलिप्सा, अहंकार आदि की राजनीति, ऋषि के मिशन को खोखला, जर्जरित, कमजोर तथा प्रभावहीन बना रही है। भावनाशील ऋषिभक्त, आर्य विचारधारा प्रेमी, और समाज हितैषी लोग अन्दर से दु:खी, बैचेन और आहत हैं, उनकी न कोई सुनता है और न मानता है।

वेद प्रचार जनता से जुड़ने, उस तक पहुँचने और सन्मार्ग दिखाने का उत्तम मार्ग है। आर्यसमाज के पास मौलिक, अद्वितीय सम्पदा-वैचारिक चिन्तन और मान्यताएँ हैं। आज भी आर्यसमाज सर्वोत्तम विचारधारा का धनी है। आज संसार सुविचारों के अभाव में जीवन व जगत् को नरक बनाकर जी रहा है। आर्यसमाज का जो जीवन-दर्शन है, वह हमें इहलोक और परमार्थ की सुखद-विचार दृष्टि देता है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व निर्माण इसका अन्तिम लक्ष्य रहा है। आज आर्यसमाज जनता से कट व हट रहा है- आज युग मीडिया, विज्ञापन व प्रचार का है। **दुर्भाग्य है कि आज तक आर्यसमाज अपना वैदिक चैनल नहीं बना सका है,** जबकि हम महासम्मेलनों पर करोड़ों रुपये कुछ समय के लिए खर्च कर देते हैं। इतने में रचनात्मक, प्रेरक उपदेशक विद्यालय व गुरुकुल चल सकता है जो कि स्थायी निर्माण का कार्य है। जिनके पास सिद्धान्त, विचार, आदर्श, जीवनमूल्य, सत्यज्ञान और संस्कृत-संस्कृति बोध नहीं है वे मीडिया, चैनलों, सार्वजनिक मंचों पर छा रहे हैं। आर्यसमाज के पास वेद ज्ञान, ऋषि परम्परा, यज्ञ, प्रेरक, सात्विक, आध्यात्मिक भक्तिपूर्ण भजन, योग का सत्य स्वरूप आदि है, इनके द्वारा जनता को बुलाया व जोड़ा जा सकता है। आज हम आर्य विचारधारा और ऋषि को आम आदमी व युवा पीढ़ी तक नहीं पहुँचा पा रहे हैं। पौराणिकों ने रामचरितमानस और हनुमानचालीसा को घर-घर तक पहुँचा दिया, सभी पढ़ व सुन रहे हैं। आर्यसमाज वेदों को सरल भाव में घर-घर तक नहीं पहुँचा सका है। इस विषय पर गम्भीरता से सोचने व कदम उठाने की जरूरत है। वेद की ज्योति जलती रहे, नारे से काम नहीं चलेगा। आज हम देश, काल, समय के अनुसार विद्वानों, पुरोहितों, भजनोपदेशकों, प्रचारकों, संन्यासियों आदि को तैयार नहीं कर पा रहे हैं। आर्यसमाज के पास युवकों को जोड़ने वाली प्रेरक संस्थाएँ नहीं हैं जो आधुनिक समयानुसार उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर सकें। आज की युवा पीढ़ी भटकन, अन्धविश्वास व अज्ञान में फँस रही है। वह सत्य व शान्ति चाहती है। वह ढ़ोंग, पाखण्ड, आडम्बर, गुरु, महन्तों, सन्तों आदि से तंग रही है। आर्यसमाज के पास सद्ज्ञान, विचार, प्रेरणा व जीवन दर्शन है। किन्तु-परन्तु-लेकिन हमें कहना आता है, करना नहीं आता, युवा पीढ़ी भाषण नहीं आचरण देखती है। आर्यसमाज को अपने स्वरूप को सम्भालने तथा पुनर्मूल्यांकन की जरूरत है। वर्तमान जीवन-जगत की ज्वलन्त समस्याओं का समाधान वैदिक जीवन-दर्शन में है। अत: आर्यो! उठो! जागो! सोचो! विचारो! करो! यह समय विवादों का नहीं संवादों का है। चिन्ता नहीं चिन्तन करो। जिन उद्देश्यों, आदर्शों व सिद्धान्तों के लिए ऋषिवर ने आर्यसमाज बनाया था, उन्हें समझो, पकड़ो और आगे बढ़ाओ। यही वेद प्रचार है।

– **दिल्ली**

ऋषि मेला २०१३

हेतु स्टॉल आवंटन

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष ऋषि मेला ८, ९, १० नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१३ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा :– कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**–७.५ × १५ फीट।

ध्यातव्य : –१. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर–उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना अनुमति के पूर्व में स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें।

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में ठोस श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्त्व भी एक दिन समाप्त प्राय: हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहे हैं, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्य जन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें।** इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला २०१४ दिल्ली में प्रचार-प्रसार की योजना तैयार की गयी है।

सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-१. यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। **२.** आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों का पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। **३.** दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय परम्परा, कर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है व होगी। **४.** पाखण्ड, मक्कारी, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। **५.** सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। **६.** सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है, जरूरी है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा-१.** सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साईज डमई आकार में होगी। लागत मूल्य ५०/- रुपये प्रति पुस्तक। **२.** ऋषि जीवन चरित्र हिन्दी में लगभग २०० पृष्ठ व साईज डमई आकार में। लागत मूल्य ३०/- रुपये प्रति पुस्तक। **३.** सत्यार्थप्रकाश हिन्दी से इतर (अन्य) भाषियों के लिए सी.डी.या डी.वी.डी. के माध्यम से उपलब्ध करवाया जायेगा। इस डी.वी.डी. में लगभग १८ भाषाओं में सत्यार्थप्रकाश होगा। लागत मूल्य लगभग २५/- होगा। **४.** संक्षिप्त ऋषि जीवन चरित्र अंग्रेजी में। लागत मूल्य १०/- रुपये।

नोट-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को नि:शुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य शिक्षित विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए अच्छी वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता सम्पर्क आदि हो। जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

नोट-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय **सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार शीर्षक** अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप चैक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर देवें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-**परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

नोट : इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

सम्पर्क : मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

१५६ वर्ष पूर्व जब दिल्ली खून से लथपथ हुई

- विरजानन्द दैवकरणि

भारत को स्वतन्त्र हुए ६६ वर्ष हो गये हैं। स्वतन्त्र भारत में जन्म लेने वाले नागरिकों को दायाद में प्राप्त स्वतन्त्रता के महत्त्व का अनुभव नहीं हो सकता। जैसे पिता से प्राप्त सम्पत्ति, भवन आदि का मूल्यांकन पुत्र यथार्थरूप से कभी नहीं कर सकता अथवा किसी संस्था की स्थापना में जो कष्ट संस्थापक झेलता है, उस कष्ट का भावी पीढ़ी कभी भी सही मूल्यांकन नहीं कर सकती। ऐसे ही स्वतन्त्र हुये देश तथा संस्था आदि में पदलोलुप, प्रतिष्ठा के इच्छुक तथा धनादि से स्वार्थ साधन में तत्पर लोग आ-आकर अपनी जड़ें जमाने में तत्पर रहते हैं।

ऐसे ही स्वतन्त्र भारत की वर्त्तमान अवस्था है। जिन देशभक्त वीरों ने निःस्वार्थ भाव से भारत की पराधीनता की बेड़ियाँ काटने नें अपार यातनायें सही थीं, उनको वह सम्मान नहीं मिल रहा जिसके वे योग्य थे या हैं।

यों तो भारत में स्वतन्त्रता प्राप्ति के यत्न हूण, कुषाण और मुस्लिम शासनकाल से ही होते आ रहे थे। परन्तु अंग्रेजी शासन के समय सन् १८५७ में पूरे भारत में और विशेषकर उत्तरीभारत में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये महान् संघर्ष किया गया था। उस समय अंग्रेजों ने भारत के लाखों स्वातन्त्र्य वीरों का कत्ल किया, फाँसी पर चढ़ाये, तोप के आगे बान्धकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये, ग्राम नगर जलाये गये, धन सम्पत्ति लूट ली गई, उद्योग-धन्धे नष्ट कर दिये गये इत्यादि अनेक प्रकार से देश को अधोगति की ओर ले जाने का पूरा प्रयत्न किया गया था।

भारत की राजधानी दिल्ली १८५७ ईस्वी में छोटी-सी थी जैसे कश्मीरी गेट, मोरी गेट, लाहौरी गेट, अजमेरी गेट, तुर्कमान गेट, दिल्ली गेट आदि के बीच में चार दीवारी से घिरी हुई दिल्ली थी।

भारत के स्वतन्त्रता प्रिय वीर नेताओं ने ३१ मई १८५७ को सारे भारत में एक ही समय क्रान्ति करने की योजना बनाई थी, परन्तु समय से पहले ही १० मई को ही अम्बाला में क्रान्ति का आरम्भ हो गया। उस समय दिल्ली में कैसे-कैसे भीषण अत्याचार हुये इसका संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया जा रहा है।

पहले पहल अंग्रेज लोग व्यापारी के रूप में भारत में घुसे थे और यहाँ के राजाओं, बादशाहों और नवाबों के आगे घुटने टेककर दीनता पूर्वक थोड़ी-थोड़ी भूमि की माँग करने लगे थे और शनैः शनैः छलकपट पूर्वक धन और सैन्य शक्ति से सम्पन्न होकर यहाँ के शासकों को परस्पर लड़ा-भिड़ाकर एक का पक्ष लेकर दूसरे को पराजित करके आप राज्य हथियाते चले गये। यह सब विश्वासघात के सहारे से हुआ।

दिल्ली के सम्राट् को दी जाने वाली भेंट बन्द करके सम्राट को पददलित करने का कुचक्र चलाया। बेगमों के मूल्यवान् हीरे, जवाहरात, धन, सम्पत्ति और पहनने के कपड़े तक छीन लिये। किसानों की पैतृक भूमि छीन कर उस पर अंग्रेजों को बसा दिया जाता था। अंग्रेज अफसर के सामने भारतीय को घोड़े से उतरकर पैदल चलने तथा सलाम करने को विवश किया जाता था। संस्कृत विद्यालयों और मन्दिरों को दान में दी हुई भूमि छीन ली गई। अम्बाला और मेरठ से क्रान्ति की जो ज्वाला सुलगी थी वह दिल्ली पहुँच गई और दिल्ली में रहने वाले अंग्रेजों को पराजित करके दिल्ली पर बहादुर शाह जफर का अधिकार करवा दिया। इसी प्रकार देश के बहुत बड़े भाग में अनेक राज्य और रियासतें स्वतन्त्र हो गई। परन्तु क्रान्तिकारियों के नेतृत्व और व्यवस्था में ढील होने के कारण अंग्रेज पुनः अपने खोये हुये राज्य को प्राप्त करने में सफल होते गये। उन्होंने विश्वासघाती लोगों की सहायता से तथा भयङ्कर अत्याचार करके यह विजय प्राप्त की थी।

इसी विजय शृंखला में १४ सितम्बर १८५७ को अंग्रेजों ने दिल्ली पर पुनः धावा बोल दिया इस युद्ध में नाभा, पटियाला और जींद के सिख सैनिकों ने अंग्रेजों का पूरा साथ दिया। इसी प्रकार ग्वालियर के सिन्धिया ने तथा हैदराबाद के नवाब ने भी क्रान्तिकारियों का सहयोग न करके अंग्रेजों की सहायता की थी। यदि ये लोग विश्वासघात नहीं करते तो भारत का इतिहास ही पलट गया होता।

अंग्रेजों के दिल्ली में घुसते ही जामा मस्जिद से निकलकर मुसलमानों ने तलवारों के सहारे अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। बदले में अंग्रेजों ने गोलियाँ चलाईं। और सैंकड़ों मुसलमान जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर ही लुढ़क गये।

इसी प्रकार २४ सितम्बर तक भयंकर युद्ध होता रहा जिससे सारी दिल्ली लहूलुहान हो गई। बहादुरशाह लाल किले से निकल कर हुमायूँ के मकबरे में जा ठहरे। बादशाहके समधी मिर्जा इलाहीबख्श ने विश्वासघात किया और कप्तान हडसन को सूचना देकर बादशाह को पकड़वा दिया। कप्तान हडसन ने सम्राट बहादुरशाह, बेगम जीनत

महल और शहज़ादा जवाँबख्श को बन्दी बना कर लाल किले में कैद कर दिया।

इसी आपाधापी में बादशाह के दो पुत्र तथा दो पौत्र हुमायूँ के मकबरे में ही रहे गये। मिर्जा की सूचना पाकर कप्तान पुन: मकबरे में गया और चारों को पकड़ लाया। और दिल्ली गेट से बाहर दक्षिण की ओर जहाँ आजकल मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज है उसके पास बने बड़े द्वार पर उनको नंगा करके स्वयं उनकी छाती में गोलियाँ दाग दी और सुनते हैं कि हडसन चारों शहजादों का गर्म लहू चुल्लू भरकर पी गया। शहजादों के सिर काट कर थाली में रख कपड़ा ढ़ककर बादशाह के सामने लाये गये और कहा- 'कम्पनी की ओर से आपके लिये यह भेंट है जो कई वर्षों से रुकी हुई थी।' फिर उन शहजादों के सिर बाहर द्वार पर टांग दिये जिसे आजकल खूनी दरवाजा कहते हैं। शहजादों के धड़ कोतवाली के सामने टांग दिये गये जिससे जनता में भय और आतंक छाया रहे।

यह कुकृत्य करके अंग्रेजों ने दिल्ली को जी भरकर लूटा, हजारों निरपराध लोग कत्ल कर दिये, हजारों को फाँसी पर चढ़ा दिया, मकानों में आग लगा दी। अस्पतालों में घुसकर घायल लोगों को भी गोलियों से भून दिया गया।

बहुत-से लोगों को बन्दूक की संगीनों से बींधा और बहुतों को जीवित ही जला दिया। मारने से पहले लोगों से गिरजाघरों में झाड़ू लगवाई और मुसलमानों के शरीर पर सूअर की चर्बी मसली गई तथा कितने ही जीवित मुसलमानों को सूअर की खाल में सी दिया गया था।

सारे दिल्ली नगर में कुत्ते लाशों को घसीटते, फाड़ते फिर रहे थे और गिद्ध नोंच-नोंच कर खा रहे थे। बहुत से लोग भूख से तड़फ कर मर गये और हजारों औरतें अपने धर्म की रक्षा के लिये कुओं में कूद गईं। लोगों के सामने ही उनकी बहू-बेटियों से बलात्कार किये गये, ऐसी दुरवस्था में कितने ही लोगों ने अपने परिवार की स्त्रियों को स्वयं ही कत्ल कर दिया, जिससे वे अंग्रेजों के द्वारा दूषित न की जा सकें।

मन्दिर-मस्जिदें तोड़ दिये। जो बचे उनमें शौचालय और सैनिकों की बैरिकें बना दी गईं। एक सरकारी आज्ञा निकालकर सूने पड़े घरों से सम्पत्ति लूटकर सैनिकों में बांट दी गई तथा कीमती वस्तुयें अंग्रेज अधिकारियों को दे दी गईं।

इन युद्धों के समय देश का अरबों रुपया लूटकर इंग्लैण्ड भेजा गया। जितने अंग्रेज नंगे भूखे भारत में आये थे, सभी लाखों करोड़ों के स्वामी होकर लौटे। सिन्ध को जीतने वाले एक अंग्रेज चार्ल्स नेपियर ने लिखा है-

''सिन्ध को विजित करने का हमारा एक मात्र लक्ष्य धन संग्रह करना था। गत साठ वर्षों में अंग्रेज भारत से दस अरब रुपया ले जा चुके थे। इस धन का एक-एक पैसा हमने भारतीयों के बहते हुये रक्त से उठाकर ही अपनी जेब में रखा था। इस धन को हम चाहे जितना ही पोंछे, धोयें, परन्तु उसपर लगा हुआ खून का दाग कभी नहीं मिट सकता।''

पाठक यदि लूट का इतिहास जानना चाहें तो पढें मुर्शिदाबाद की लूट का विवरण कि जहाँ से सात सौ बड़े-बड़े सन्दूकों में सोना चाँदी भरकर एक सौ नावों द्वारा लाया गया था। इसी प्रकार बंगाल, लखनऊ (अवध), रुहेलखण्ड, बनारस, इलाहाबाद, हैदराबाद, श्रीरंगपट्टन, फर्रुखाबाद, तंजोर (कर्णाटक) मराठामण्डल, बुरहानपुर, आगरा, नागपुर, मैसूर, आदि को बुरी तरह लूटा और लूट का सारा माल अपने देश इंग्लैण्ड में भेजते रहे। नागपुर के राघो जी भौंसले की मृत्यु के बाद उनके दत्तक पुत्र को मान्यता न देकर नागपुर को लूट लिया। राजा के सुन्दर-सुन्दर घोड़े और बैल पाँच-पाँच रुपये में बेच दिये तथा हाथी सौ-सौ रुपये में बेचे। करोड़ों रुपये की हीरे जवाहरात नीलाम कर दिये। इसी भाँति फैजाबाद की बेगमों को यातनायें देकर एक करोड़ बीस लाख रुपये का सामान लूट लिया गया।

दिल्ली तथा आसपास के हजारों निर्दोष लोगों पर झूठे अभियोग चलाकर सबके सामने पेड़ों पर फाँसी दे दी। इस प्रकार आतंक के बल पर अंग्रेज दिल्ली का राज्य पुन: प्राप्त करने में सफल हो गये।

यदि उस समय क्रान्तिकारियों को उचित नेतृत्व मिल जाता और संगठित होकर एक सिरे से अंग्रेजों को मारने लगते तो स्वल्पकाल में ही उन मुट्ठी भर गोरों को समाप्त किया जा सकता था। परन्तु दुर्भाग्य था कि हमारे ही देश के वासी अंग्रेजों की सेना में भरती होकर अपने ही भाइयों का खून करते रहे। अंग्रेजों ने पैसे और पदों का लालच देकर फूट डालकर लोगों को अपने पक्ष में कर लिया था। यही रोग आज भी इस देश में ज्यों का त्यों विद्यमान है। वैदिक धर्म की शिक्षा के बिना शुद्ध देशभक्ति की भावना नहीं आ पाती। इसीलिये हम मार खाते आये हैं।

दिल्ली पानीपत मार्ग पर दिल्ली से २४वें किलोमीटर पर अलीपुर तथा ३०वें किलोमिटर पर कुण्डली ग्राम है। इनके क्रान्तिकारी वीरों को हाथी के पीछे भारी कोल्हू बाँधकर सड़क पर लिटाकर ऊपर से कोल्हू चलवाकर चकनाचूर कर दिया गया। इनमें से एक कोल्हू आज भी जी.टी. रोड नं. १ पर धौला कुआँ (स्वरूप नगर के सामने) के पास एक पैट्रोल पम्प के नीचे दबा पड़ा है तथा दूसरा दिल्ली पानीपत मार्ग पर दिल्ली से ४४वें किलोमिटर पर एक पार्क

में सुरक्षित है। इन ऐतिहासिक धरोहरों को दिल्ली और हरियाणा सरकार के संग्रहालय में स्थान मिलना चाहिये।

भारत के इस महासमर में नानासाहब पेशवा, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बिहार के राजा कुँवरसिंह, प्रथम शहीद मंगल पाण्डेय, तात्या टोपे आदि वीरों का प्रमुख योगदान था। इस समर की तैयारी में देश के साधु-महात्माओं का भी महत्त्वपूर्ण सहयोग था। मथुरा के दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती ने भी देश के प्रसिद्ध वीरों और नेताओं को बुलाकर योजना पूर्वक युद्ध करने का कार्य सौंपा था। उसी समय स्वामी दयानन्द सरस्वती कभी घोड़े पर तथा कभी पैदल नर्मदा के संगम से लेकर हरिद्वार तक भ्रमण करके देशवासियों को क्रान्ति के लिये तैयार कर रहे थे। ऐसी सूचनायें सौरम (मुजफ्फरनगर) के रिकॉर्ड में हैं।

इस प्रकार यह क्रान्ति आरम्भ तो हुई, परन्तु सही संचालन के अभाव के कारण पूर्णत: सफल नहीं हुई।

अस्तु अंग्रेजों द्वारा इतना अमानवीय अत्याचार करने पर भी स्वतन्त्र भारत की पीढ़ी अंग्रेजों की जूठन उनकी भाषा, वेशभूषा, रहन-सहन, खान-पान और संस्कृति सभ्यता को अपनाने में गर्व अनुभव करती है। इससे बढ़कर हमारे लिये लज्जा की और क्या बात हो सकती है। क्या हम अब भी अंग्रेजों के मानसिक दास बने ही रहेंगे अथवा कुछ अपनी बुद्धि का भी सदुपयोग करना सीखेंगे और जापानियों की भाँति देशभक्त बनने का यत्न करेंगे।

- गुरुकुल झज्जर

।।ओ३म्।।

वेद गोष्ठी का विषय

वेद और सत्यार्थ प्रकाश का १२वाँ समुल्लास

विषयः- चारवाक, बौद्ध, जैन सिद्धान्तों के खण्डन से सम्बन्धित विषय।

१. पृथिव्यादि भूतों के संयोग से शरीर में चेतनता उत्पन्न होती है।
२. विषयों से उपलब्ध क्षणिक सुख-दु:ख ही पुरुषार्थ का फल है, इससे भिन्न स्वर्ग=मोक्ष कुछ नहीं है।
३. मूल-द्रव्य में जगत् की उत्पत्ति करने का स्वाभाविक सामर्थ्य होने से जगदुत्पत्ति में चेतन कर्त्ता की आवश्यकता नहीं है।
४. सर्वशून्य सिद्धान्त।
५. सर्व संसार दु:खरूप का सिद्धान्त।
६. क्षणिकवाद का सिद्धान्त।
७. स्याद्वाद् और सप्तभङ्गी न्याय।
८. जीव से भिन्न अन्य कोई चेतन तत्त्व नहीं है।
९. ईश्वर की सिद्धि में प्रत्यक्षादि प्रमाण सिद्ध नहीं हैं।
१०. ईश्वर का सृष्टिकर्त्ता होना, व्यापक होना, सदा मुक्त होना रूपी गुणों के खण्डन के द्वारा ईश्वर नहीं है।
११. कार्य जगत्, जीव के कर्म और बन्ध अनादि हैं।
१२. जीव अनन्त हैं।
१३. पाषाणादि मूर्ति पूजा और उससे मुक्ति।
१४. मुक्ति का अनन्त काल है।
१५. एक शरीर में अनन्त जीव हैं।
१६. शरीर व भूगोल के पदार्थों की आयु व परिमाण।
१७. हिंसा व अहिंसा का स्वरूप।

सहयोगी ग्रन्थ

१ - सर्वदर्शन संग्रह
२ - प्रकरण रत्नाकर
३ - वेदों का यथार्थ स्वरूप-पं. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड
४ - स्वामी वेदानन्द जी की टिप्पणियाँ (सत्यार्थ प्रकाश में)

आर्यों का आदि देश

- इन्द्रजित् देव

प्रसिद्ध देशभक्त व स्वतन्त्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक ने एक लेख में लिखा था- ''वेदों के आधार पर यह सिद्ध है कि भारत में आर्य मध्य एशिया से आए थे।'' लेख पढ़कर बंगाल के एक सत्यप्रेमी उमेशचन्द्र पुणे में जाकर तिलक जी से मिले व उन्होंने तिलक जी से पूछा- ''आपने वेद पढ़े हैं?'' ''नहीं मैंने वेद नहीं पढ़े।'' ''फिर किस आाधार पर आपने माना है कि वेदों में यह लिखा है कि आर्य बाहर से भारत में आए थे?''

तिलक जी ने स्वीकार कर लिया कि उन्होंने वेद नहीं पढ़े तथा अंग्रेजों की मान्यताओं के अनुसार मैंने ऐसा लिखा है। तिलक जैसे अनेक बुद्धिजीवी भी यह मानने लगे हैं कि आर्य यहाँ बाहर से आए थे। यह खतरनाक मान्यता अंग्रेजों द्वारा सन् १८५७ ई. के स्वतन्त्रता संग्राम में भारत के सभी सम्प्रदायों की एकता को देखकर सन् १८६३ ई. में प्रचारित की गई थी जो देश के स्वतन्त्र होने के बावजूद अभी तक प्रचारित व पाठ्यक्रम में पढ़ाई जा रही है। इसका उद्देश्य अंग्रेजों का दक्षिण भारतीयों को यह अनुभव कराना कि इस देश के मूल निवासी तो तुम ही हो तथा आर्य बाहर से आए व आक्रमण द्वारा शासक बन बैठे थे। तुम्हें दक्षिण में बिठा दिया व स्वयं सभी रीतियों-नीतियों के निर्धारक बने रहे। यूनानी, हूण, यवन, मंगोल, पठान आदि आक्रमणकारी भी आए तो वे ही राजा बनते गए। यदि हम बाहर ...... में बने हैं तो नई व अचम्भे की बात नहीं है। उत्तर भारत के आर्यों के वंशज व कुछ आक्रमणकारी ही शासक बनते आए हैं। हमें यदि भारत से निकालने में यहाँ के क्रान्तिकारी सफल हो गए तो यहाँ की सत्ता उत्तर भारतीयों के हाथ में ही रहेगी। इससे राष्ट्र में पूर्ण भावात्मक एकता स्थापित होने में बाधा उपस्थित हो रही है।

परन्तु आजतक कोई भी इतिहासकार व नेता उस एक निश्चित स्थान या देश का नाम नहीं बता पाए जहाँ से आर्य उनके अनुसार भारत में आए थे। इनमें से कुछ लोग ईरान का नाम लेकर आर्यों का मूल देश उसे बताते हैं। इस सम्बन्ध में प्रो. असगर वजाहत के एक लेख का सन्दर्भ देना प्रासंगिक है। छः वर्ष पूर्व वे ईरान की यात्रा कर के आए व अपने संस्मरणात्मक लेख में उन्होंने लिखा था- ''वहाँ की भाषा संस्कृत से बहुत मेल खाती है तथा जब तक वहाँ राजशाही रही, तब तक वहाँ के शासक अपने नाम के पीछे 'मेहर' शब्द लिखते थे जिसका फ़ारसी में अर्थ सूर्य है। ऐसा भी वहाँ पढ़ाया जाता है कि हम भारत से ईरान में आए। सूर्यवंशी आर्य स्वयं को घोषित करके वहाँ के शासक अपने पूर्वजों का मूलदेश भारत ही घोषित करते थे।'' इस सम्बन्ध में एक महत्त्वपूर्ण घटना प्रमाण रूप में प्रस्तुत है। ११ सितम्बर २०१० को भारत में ईरानी राजदूत सैयद महदी नाबीजाद व ईरानी एम्बैसी के काऊँसलर डॉ. हुसैन करीम जब श्री कृष्णा संग्रहालय, कुरुक्षेत्र में पधारे तो उसे देखकर वे दोनों गद्गद् हो गए। काऊँसलर ने तो यहाँ तक कहा कि जम्मू द्वीप से पश्चिम की ओर जाने वाले आर्य कहलाए तथा ईरान से भारत में आने वाले हर व्यक्ति को कुरुक्षेत्र के इस संग्रहालय को देखने अवश्य भेजा जाएगा।''

इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् प्रो. मैक्समूलर के भाषणों के संग्रह ''India what it can teach'' के हिन्दी अनुवाद 'विश्व को भारत की देन' के पृ. २१ पर लिखा है- ''यह निश्चित है कि हम सब पूर्व से ही आए हैं। इतना ही नहीं, हमारे जीवन में जो कुछ मूल्यवान् और महत्त्वपूर्ण है, वह सब हमें पूर्व में ही मिला है। ऐसी स्थिति में जब भी हम पूर्व की ओर जायें, तब हमें यह सोचना चाहिए कि पुरानी स्मृतियों को संजोए हम अपने पुराने घर की ओर जा रहे हैं।'' अपने ही देश के संस्कृत विद्वान् की बात भी अंग्रेज नहीं मानते तो स्पष्ट है कि उनकी नीयत सत्य के विपरीत है।

आज भारतीय संविधानानुसार भारत का नाम इण्डिया अर्थात् भारत है। इससे पूर्व इस देश का नाम हिन्दुस्तान था। उससे पहले इसे भारत और सबसे पहले इसका नाम आर्यावर्त्त था, जिसका अर्थ है- आर्यों के निवास करने का देश। हम पूछते हैं कि यदि आर्य बाहर से आकर यहाँ बसे थे तो उनसे पूर्व यहाँ के निवासियों ने इस देश का नाम क्या रखा था तथा उसका प्रमाण क्या है? यदि आर्यों ने आक्रमण करके यहाँ के मूल निवासियों पर विजय पाई थी तथा स्वयं शासक बन बैठे थे तो इसे इतिहासकारों द्वारा वे लिखवाते। भारत की किसी प्राचीन पुस्तक में इस का वर्णन क्यों नहीं? आर्यों ने राक्षसों पर विजय पाई थी तो उसका उल्लेख रामायण में उल्लिखित है। आज से पाँच हजार वर्ष तक आर्यों का संसार भर में चक्रवर्ती राज्य था व संसार का प्रथम विश्व युद्ध महाभारत कुरुक्षेत्र में लड़ा गया था जिसमें संसारभर के कई देशों के राजा इस या उस पक्ष में आकर लड़े थे। इस युद्ध का वर्णन आर्यों ने 'महाभारत' में किया है। मुसलमानों ने बाहर से अपने आने तथा यहाँ के शासकों को पराजित करने का वर्णन

किया है तो यदि आर्यों ने ऐसा ही किया था तो उन्होंने अपनी सफलता का वर्णन क्यों नहीं किया? यहाँ के कथित मूल निवासियों के पास भी कोई प्रमाण इस विषय में नहीं है। अंग्रेजों के भारत में आने से पूर्व यहाँ मुसलमानों का राज था। वे विदेशों से आए व आक्रमणों द्वारा ही यहाँ के शासकों पर विजय पाकर शासक बने। ऐसा उनके समय के इतिहासकारों ने लिखा या उनसे लिखवाया गया जिनमें गुलबदन, अलबेरूनी व अब्बूफजल आदि कुछ नाम प्रसिद्ध हैं। इतिहासवेत्ता प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु ने पूछा है कि मुस्लिम शासकों व इतिहासकारों को आर्यों के प्रति श्रद्धा का भाव था, ऐसा कदापि नहीं माना जा सकता। यदि सचमुच ही आर्य बाहर से आकर भारत के शासक बने होते तो वे इतिहासकार भी अंग्रेजों की तरह यह अवश्य लिखते व शासक प्रचारित करते कि हम से पूर्व भी भारत पर बाहर से आए आर्यों ने आक्रमण किए व स्वयं शासक बन बैठे थे। ऐसा किसी यूनानी, अफ़गानी, तुर्की, पठानी व अरबी इतिहासकार ने नहीं लिखा। इससे भी सिद्ध है कि 'फूट डालो तथा राज करो' की अपनी दुर्नीति के अधीन अंग्रेजी शासकों ने ही ऐसा प्रचार किया है।

संसार की सभी जातियों, पन्थों व सम्प्रदायों के लोगों को अपने मूल धर्म-स्थानों के प्रति आस्था व आकर्षण है। मुसलमान मक्का मदीना जाते हैं, भारत के बाहर रह रहे बौद्ध तीर्थों की यात्रा श्रद्धापूर्वक करने भारत में आते हैं। मॉरिशस, फ़िजी व सुरिनाम आदि देशों से अनेक ऐसे व्यक्ति भारत में आकर उन स्थानों की श्रद्धा व आत्मीयता से यात्रा करते हैं, जहाँ से लगभग सवा सौ वर्ष पूर्व उनके पूर्वजों को भारत से ले जाकर अंग्रेजी शासन द्वारा उपरोक्त देशों में मजदूरों के रूप में जबरदस्ती बसाया गया था। आर्य भी बाहर से भारतवर्ष में आए होते तो आर्य (=वर्तमान में हिन्दू) भी अवश्य ही अपने मूल देश के मूल नगर की यात्रा पर जाते। वे कभी इस दृष्टि से बाहर नहीं गए। इसके विपरीत महर्षि दयानन्द सरस्वती से पूर्व तक विदेशों में जाना हिन्दूओं में पाप माना जाता था।

एक यह कुतर्क दिया जाता है कि आर्यों के इस देश में आने से पूर्व यहाँ हड़प्पा में द्रविड़ सभ्यता व्यवहृत थी व आर्यों ने यहाँ आकर उसे नष्ट कर दिया। खुदाई से जो अवशेष मिले हैं, उनके आधार पर प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता बी.बी. लाल ने कहा था- हड़प्पा व आर्य सभ्यता में साम्य है। दोनों एक ही हैं व आर्य बाहर से नहीं आए थे, न इस आधार पर आर्यों का बाहर से आया सिद्ध होता है। हड़प्पा के खण्डहरों में कई मूर्तियाँ ऐसी मिली हैं जिनमें हाथ जोड़कर आम भारतीयों की तरह अभिवादन करना दिखाया गया है। यह विधि भारत के आदिवासी आर्यों की ही है। बैंगलोर के प्रो. एन.एस. राजाराम के अनुसार हड़प्पा में मिली मोहरों व वैदिक मन्त्रों में समानता है। इन मोहरों में स्वास्तिक व ओ३म् के चिह्न हैं। ऋग्वेद के मन्त्र ''द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया परि षस्वजाते......'' के अनुसार संसार रूपी वृक्ष पर जीवात्मा व परमात्मा दो पक्षी बैठे हैं। इस वृक्ष में लगे फलों को जीवात्मा भोग कर रहा है परन्तु परमात्मा भोग नहीं कर रहा। वह जीवात्मा के कार्यों को देखता है।'' इस वैदिक मान्यता की चित्रात्मक मोहर भी हड़प्पा की बस्तियों के खंडहरों से मिली है। हैदराबाद के सेन्टर फ़ार सेल्युलर एण्ड मालिक्यूलर बायोलॉजी व अन्य संस्थाओं ने यह अनुसन्धानात्मक तथ्य प्रस्तुत किया है कि भारत के लगभग सभी निवासियों की कोशिकाओं का जैनेटिक ढांचा पर्याप्त मिलता-जुलता है व बहुत पुराना है।'' लगभग २६०० वर्ष पूर्व चालू हुआ माजदास धार्मिक उपासना पर आधारित पारसी सम्प्रदाय से प्रेरित है तथा पारसी सम्प्रदाय में आर्यों के धर्म ग्रन्थ वेदों में वर्णित ईश्वर के निज व मुख्य नाम ओम् को ओन् के समान ही उच्चारण करते हैं। डॉ. फतेह सिंह ने मोहन जोदड़ों तथा हड़प्पा की बस्तियों के खण्डहरों के विषयक व्यापक अनुसन्धान करके सिन्धु घाटी की सभ्यता को वैदिक सभ्यता ही सिद्ध किया था। स्वतन्त्र भारत में भी उनपर यह दबाव डाला गया कि वे अपने अनुसन्धानात्मक निष्कर्षों में इसे द्रविड़ सभ्यता के ही चिह्न सिद्ध करें। उन्होंने ऐसा नहीं किया व अपने स्वतन्त्र व मूल निष्कर्षों पर डटे रहे। परिणामत: उन्हें राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान का अध्यक्ष पद गंवाना पड़ा। अपने शोध को आगे बढ़ाने हेतु डॉ. फतेह सिंह ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से आर्थिक सहायता माँगी परन्तु आयोग के अधिकारी सौम्युलम के पत्र द्वारा यह उत्तर मिला था कि आप मोहन जोदड़ो व हड़प्पा के मैदानों में बिखरे अवशेषों की दिक चिह्न की बजाय द्रविड़ चिह्न घोषित करेंगे तो ही अनुदान मिलेगा। उन्हें यह भी कहा गया कि आप यह भी सिद्ध करें कि ऋग्वेद में अशुद्धियाँ हैं। अत: इसका पुनर्लेखन करना होगा। सत्यान्वेषी व सत्याग्रही डॉ. फतेहसिंह की कलम बिकाऊ न थी। उन्होंने उत्तर में लिखा- ''यह काम मुम्बई का हेरास इन्स्टीट्यूट कर ही रहा है। मैं न कर सकूँगा।'' जब स्वतन्त्र भारत में ऐसा हुआ है तो परतन्त्र भारत में अनुसन्धानकर्त्ताओं को खरीदने का कार्य तो अवश्य ही हुआ था। इसका भी एक ठोस व सत्य प्रमाण यह है कि सत्यानुरागी सुप्रसिद्ध वैदिक रिसर्च स्कॉलर पं. भगवद्दत्त जी को अंग्रेजों की ओर से वेदों की जड़े काटने, आर्यों को आक्रान्ता घोषित करने उत्तर भारत के एक प्रमुख वर्ग जाटों को भी आक्रान्ता सिद्ध करने पर भरपूर कथित अनुदान देने की पेशकश की

गई थी जिसे सत्यकारी-सत्यमानी उस विद्वान् ने स्वीकार नहीं किया। यदि वे जाटों को विदेशों से आए घोषित कर देते तो निश्चित ही जाटों के प्रति भी शेष....... की घृणा का उदय होता। अंग्रेजों द्वारा फूट डालकर राज करने का यह भी एक प्रमाण है।

राजाओं ने अनेक कलमों को खरीदा है- चाहे वे इतिहासकारों की रचना हों अथवा अनुसन्धानकर्त्ताओं की हों। पहले से स्थापित व मान्यता प्राप्त ऐतिहासिक तथ्यों में ..... परिवर्तन कराना शासकों की प्राचीन परम्परा रही है। ऐसी परम्परा का निर्वहन यदि अंग्रेज कौम ने किया तो अचम्भा व दु:ख क्या है? अचम्भा व दु:ख तो तब है, जब स्वतन्त्र हो जाने के बाद भी हमारी अपनी सरकारें भी वैदिक, सत्य तथा प्रामाणिक घटनाओं से छेड़छाड़ करती-कराती हैं। हालांकि स्वतन्त्रा पूर्व प्रचारित व स्थापित असत्य मान्यताओं का शोधन करना एक स्वतन्त्र, पूर्ण स्वाभिमानी एवं राष्ट्रवादी सरकार की यह प्रथम जिम्मेदारियों में से एक है। आर्यों का आदि देश भारत ही है, ऐसा इतिहास में पुनर्लेखन कराना उन जिम्मेदारियों का निर्वाह करने का प्रथम पग है। यह कार्य न तो विदेशी शासकों तथा न ही स्वदेशी शासकों ने किया है। इसका दुष्परिणाम आज आर्यावर्त में आपसी फूट के रूप में आप देख सकते हैं। प्रमाण स्वरूप निवेदन है कि ४ सितम्बर १९७७ को भारतीय संसद में तत्कालीन मनोनीत सदस्य फ्रैंक एन्थोनी ने मांग रखी थी-''Sanskrit should be deleted from the 8th Schedule of constitution because it is a foreign language brought to this country by foreign invaders. i.e. the aryans (Indian express 5-9-77)'' अर्थात् संविधान के आठवें परिशिष्ट में परिगणित भारतीय भाषाओं की सूची में से संस्कृत को निकाल देना चाहिए, क्योंकि यह विदेशी आक्रान्ता आर्यों के द्वारा लाई जाने के कारण विदेशी भाषा है।'' सन् १९७९ के प्रारम्भ में भारत ने अपना प्रथम उपग्रह अन्तरिक्ष में छोड़ा था। उसका नाम भारत के प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक आर्यभट्ट के नाम पर रखा गया था। इस अवसर पर २३ फरवरी १९७९ ई. को द्रविड़ मुनेत्र कड़गम के राज्य सभा सदस्य लक्ष्मण ने मांग रखी थी कि भारतीय उपग्रह का नाम 'आर्यभट्ट' नहीं रखा जाना चाहिए था। क्योंकि यह विदेशी नाम है। इसी प्रकार की एक तीसरी घटना है जो अत्यन्त घृणित है। वह इस प्रकार है कि कुछ वर्ष पूर्व तमिलनाडू में सलेम नामक नगर है। वहाँ मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र के आर्य होने के कारण उनकी मूर्ति का जुलूस निकाला गया। उस मूर्ति के गले में जूतों का हार पहनाकर झाडुओं से मूर्ति को मारते हुए यह जुलूस निकाला गया था।

स्वर्गीय श्री कृष्णकान्त (भूतपूर्व उपराष्ट्रपति) जब आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल थे तो दक्षिण भारतीय प्रान्तों के कुछ कथित बुद्धिजीवियों ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करके सरकार से मांग की थी कि आन्ध्रप्रदेश में एक द्रविड़ विश्वविद्यालय तुरन्त स्थापित किया जाए। यह माँग अभी तक तो पूर्ण नहीं हुई परन्तु देर-सवेर कभी पुनः उठेगी। इस माँग के पीछे स्वयं भारत की एक स्वतन्त्र व प्राचीनतम जाति होने की धारणा की स्थापना करने की प्रबल इच्छा है। यह मांग यदि मानी जाएगी तो भारत में मुस्लिम यूनिवर्सिटी, ईसाई यूनिवर्सिटी, सिख यूनिवर्सिटी, पारसी यूनिवर्सिटी, गोरखा यूनिवर्सिटी, हिन्दू यूनिवर्सिटी, राजपूत यूनिवर्सिटी, मिर्जाई यूनिवर्सिटी आदि असख्यं जातिमूलक यूनिवर्सिटियाँ स्थापित होंगी क्योंकि भारत में असंख्य जातिमूलक कथित जातियाँ-उपजातियाँ फैली हैं जब महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार ''इस (देश) में सदा रहते हैं, उनको भी आर्य कहते हैं।'' जब तक यह मान्यता स्थापित रही, तब तक देश में एकता सुदृढ़ रही परन्तु आर्यों को विदेशी आक्रमणकारी घोषित करने पर गहरी घृणा व फूट फैल रही है। इस सम्बन्ध में एक अन्य भयंकर प्रमाण भी प्रस्तुत है- २७ मार्च, १९७५ के ''Muslim India'' के अङ्क में जो एक लेख छपा था, उसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है- ''यह धरती (भारत) उनकी है जिनका सम्बन्ध उन लोगों से है जो इसके मूल निवासी हैं व इस आधार पर इसके वास्तविक स्वामी हैं। ये वे लोग हैं, जिन्होंने हड़प्पा तथा मोहन जोदड़ो की सभ्यता का निर्माण किया था जो संसार की बहुत पुरानी सभ्यता है। भारत के बहुत-से ईसाई तथा मुसलमान भारत के धरती पुत्रों में से परिवर्तित होकर मुसलमान व ईसाई बने हैं। ये या तो दलित थे अथवा आदिवासी। सभी विदेशी आक्रमणों के अवसरों पर इन्हीं लोगों ने भारत को बचाया है। आर्य लोग विदेशी हैं व भारत के शत्रु हैं। उन्हें भारत से प्यार नहीं है। आर्य होने से वे भारत के प्रथम आक्रमणकारी हैं। यदि मुस्लिम व ईसाई विदेशी हैं तथा इन्हें भारत से बाहर निकल ही जाना चाहिए तो भारत के प्रथम आक्रमणकारी आर्यों का यह कर्त्तव्य है कि पहले वे बाहर जायें। जो प्रथम आए, उन्हें प्रथम ही जाना चाहिए।''

यह दुष्परिणाम इसलिए निकला है कि आर्यो के विदेशों से आने की कल्पना हमें अपमानित व आपस में लड़ाने हेतु की गई थी। वेद मन्त्रों के मनचाहें अर्थ करके यह सिद्ध करने का कुप्रयास किया गया कि आर्य आदिवासियों से ही नहीं, परस्पर भी लड़ते थे। इस सुनियोजित षड्यन्त्र से हम आज भी स्वयं को नहीं बचा पा रहे। वस्तुत: आर्य एक गुणवाचक शब्द है जिसे श्रेष्ठ

व्यक्तियों के अर्थ में प्रयोग होना अभीष्ट है। ऋग्वेद ९/६३/५ के अनुसार–

इन्द्रं वर्धन्तो असुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो अराव्णः।

''इसमें ईश्वर का आदेश है कि तुम स्वयं पहले अपनी आत्मिक, शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक व वैचारिक शक्ति बढ़ाओं। अपनी बुराइयों को दूर करके विश्व को आर्य बनाओं।'' आर्य यदि जन्मगत या परम्परागत होते तो उन्हें सुधारकर आर्य कैसे बनाया जा सकता है? इसे अधिक स्पष्ट करने के लिए एक पृथक् निबन्ध लिखा जाएगा।

– चूना भट्ठियाँ, सिटी सेन्टर के निकट, यमुनानगर, हरियाणा

प्रतिक्रिया

१. प्रो. धर्मवीर जी सेवा में सादर नमस्ते। लेख 'सत्यार्थप्रकाश का ही स्वाध्याय क्यों?' आदरणीया लेखिका राज कुकरेजा।

लेखिका जी के विचारों का स्वागत है। क्योंकि सत्यार्थप्रकाश के पढ़ने से ही ऊर्जा जागती है। उत्साह पैदा होता है। निर्भयता का विकास होता है, विरोधी कितने ही क्यों न हो, भाग जाते हैं। सत्य के प्रकाश से अन्धेरा गायब हो जाता है। ऐसी ही एक घटना सुनी है। मॉरिशस के गिरमिटिया मजदूरों को ठग-ठग कर लाया गया था। दुःखी-अभाव ग्रस्त लोग खाली हाथ आये थे। साथ 'रामचरित मानस' भर ले आये थे। अपने दुःख-दर्द उसे पढ़कर मिटा लेते थे। एकमात्र सहारा था। भारत से ही एक पादरी आया था। वह हिन्दी जानता था। हमारे देवी-देवताओं के बारे में जानता था। उनका प्रयास रहता था, लोगों को ईसाई बनाना। हिन्दू लोग बहकते जा रहे थे। पादरी कहता था- आपके देवता अच्छे नहीं है। शिव ने अपने बेटे का ही गला काट दिया। हाथी का सिर लगा दिया था। राम ने अपनी पत्नी को घर से निकाल दिया था। कृष्ण की सोलह हजार नारियाँ थीं। तुम्हारे हनुमान देवता की पूंछ है आदि-आदि। लोग बहक जाते थे। जवाब नहीं दे सकते थे। एक सिपाही फौज में आया भारत से। अपने साथ 'सत्यार्थप्रकाश' लेते आया। लौटते वक्त यहीं किसी पढ़े-लिखे को दे गया। हिन्दी का ज्ञान था। थोड़ा-थोड़ा करके पढ़ा, समझा और अन्यों को भी समझाया। पादरी का जुटाव बराबर होता रहता था। लोग गुमराह होते जाते थे। एक जुटाव में एक सज्जन ने पादरी से कुछ पूछना चाहा। पादरी चौंका। आज पूछने वाला कैसे पैदा हो गया? उसने प्रश्न किया पादरी जी ईसा का जन्म सिर्फ उनकी कुँआरी माँ से कैसे हुआ। पिता का नाम नहीं जानते, क्या उनके पिता नहीं थे या उनकी माँ ने कोई गलत कदम उठाया था? पिता का नाम नहीं बताना चाहती थी। पादरी के पैर तले की जमीन निकल गई। ऐसी घटना पहली बार हुई। आज तक ऐसे गंभीर प्रश्न पूछने वाला कोई था ही नहीं। कहाँ से पैदा हो गया? पादरी बगले झांकते-झांकते भाग खड़ा हुआ। लोग उस सज्जन की ओर बढ़ने लगे, आकर्षित होने लगे। उनकी आँखें भी खुलने लगी। यह कमाल 'सत्यार्थप्रकाश' के पढ़ने से हुआ। कंठ खुल गया। वाणी में शक्ति आई। गम्भीर गूंज के साथ आवाज बाहर आई। अन्यों के दिल तक पहुँच गई। आन्दोलन चल पड़ा। वह शक्ति बराबर प्रज्वलित होती रही। शायद नहीं विश्वास है कि उसी जड़ की उपज आज का आर्यसमाज है, सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय जारी है।

सोनालाल नेमधारी, कारोलिन, वेलपुर, मॉरिशस

२. परोपकारी के सितम्बर प्रथम २०१३ अंक का सम्पादकीय पढ़कर स्वामी अग्निवेश के व्यक्तित्व और कृतित्व की स्मृति पर पड़ी हुई राख को आपने हवा देकर उड़ा दिया। संगठन की दुर्बलता, पार्टीबाजी या राजनीतिक प्रश्रय को आपने सही रेखांकित किया है जिसके कारण आज वे एक धड़े के शीर्ष स्थान पर विराजमान है। वैदिक सार्वदेशिक, नई दिल्ली के तत्कालीन सम्पादक श्री सुरेन्द्रसिंह कादियान से मेरी एक ही भेंट उनके कार्यालय में हुई थी। इस प्रथम भेंट में ही कादियान ने अवगत करा दिया था कि उनके निर्देश थे कि वैदिक सार्वदेशिक में एक लेखक की रचनाएँ बार-बार नहीं जानी चाहिए।

स्वतन्त्र भारत में इफ्तार पार्टी एक राजनीतिक शगल है। दरगाहों पर हिन्दुओं का हाजरी लगाना मानसिक गुलामी है। इन दोनों बातों को मुसलमान बहुत अच्छी तरह समझते हैं, महर्षि दयानन्द के निर्वाण को १३० वर्ष हो गए हैं पर हिन्दुओं को कभी नहीं समझाया जा सका कि वेदोक्त धर्म में ही आस्था रखने से हिन्दुओं का कल्याण होगा। नहीं तो ११ सितम्बर २०१३ को केदारनाथ मन्दिर में पूजन-अर्चन प्रारम्भ होने के साथ ही केदारनाथ में १६६ शवों के दाह संस्कार-दोनों काम साथ-साथ चलते रहेंगे।

अभिमन्यु कुमार खुल्लर, २२ नगर निगम क्वाटर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर, म.प्र.-४७४००१

।।ओ३म्।।

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में

१३० वाँ ऋषि बलिदान समारोह

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्गदर्शन देता रहता है। जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है - महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३० वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ - ६ नवम्बर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन १० नवम्बर को होगी। यज्ञ के **ब्रह्मा डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री** होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्ताराष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसंधान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से संपन्न होने वाली वेदगोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है-**वेद और सत्यार्थप्रकाश का १२वाँ समुल्लास**। जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। ८-९ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता - प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गतवर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। ८ नवम्बर को परीक्षा एवं ९ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१३ तक 'आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि-उद्यान, अजमेर' इस पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान-समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती है, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३० वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्-आचार्य बलदेव जी, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर, आचार्य विजयपाल जी-झज्जर, पं. शिवदत्त पाण्डे, पं. धीरेन्द्र पाण्डे, स्वामी ऋतस्पति, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी-गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बड़ौत, आचार्या सूर्या देवी जी-शिवगंज, डॉ. राजेन्द्र जी विद्यालंकार, डॉ. विनय विद्यालंकार, सत्येन्द्रसिंह जी-मेरठ, डॉ. कृष्णपालसिंह जी-जयपुर, धर्मपाल जी-दिल्ली, श्री सत्यानन्द आर्य-दिल्ली, श्री राजवीर-मुरादाबाद, श्री जगदीश शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव आर्य-राजकोट, श्री प्रकाश आर्य-महू, विनय जी-दिल्ली, श्री सत्यपाल पथिक, पं. भूपेन्द्र सिंह जी आदि

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अंतर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य — **प्रधान**

धर्मवीर — **कार्यकारी प्रधान**

ओम मुनि वानप्रस्थ — **मंत्री**

ईमेल व वेबसाईट-email : psabhaa@gmail.com, www.paropkarinisabha.com

कार्यक्रम

शुक्रवार, दिनांक ८ नवम्बर, २०१३

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ–आसन–प्राणायाम–ध्यान–सन्ध्या

०७.०० से ०९.०० तक – यज्ञ, वेदपाठ। ब्रह्मा – डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री

०९.०० से ०९.३० तक – वेद प्रवचन

०९.३० से १०.०० तक – प्रातराश

१०.०० से १२.३० तक – **ध्वजारोहण व उद्‌घाटन सत्र**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन, विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **स्वामी दर्शनानन्द शताब्दी समारोह, भजन–प्रवचन–सम्मान**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ, सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **महर्षि दयानन्द– एक विलक्षण व्यक्तित्व, भजन–प्रवचन–सम्मान**

शनिवार, दिनांक ९ नवम्बर, २०१३

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ–आसन–प्राणायाम–ध्यान–सन्ध्या

०७.०० से ०९.०० तक – यज्ञ, वेदपाठ। ब्रह्मा – डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री

०९.०० से ०९.३० तक – वेद प्रवचन

०९.३० से १०.०० तक – प्रातराश

१०.०० से १२.३० तक – **धर्मान्तरण–राष्ट्र के लिए घातक, भजन–प्रवचन–सम्मान**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन व विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **वर्तमान में आर्यसमाज की भूमिका, भजन–प्रवचन–सम्मान**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ–सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **म.द. आर्ष गुरुकुल–स्नातक सत्र, भजन–प्रवचन–सम्मान**

रविवार, दिनांक १० नवम्बर, २०१३

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ–आसन–प्राणायाम–ध्यान–सन्ध्या

०७.०० से ०९.३० तक – यज्ञ, वेदपाठ, **पूर्णाहुति**, ब्रह्मा– डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री

०९.३० से १०.०० तक – वेद प्रवचन

१०.०० से १०.३० तक – प्रातराश

१०.३० से १२.३० तक – **भजन–प्रवचन–सम्मान**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन व विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **आर्य युवक सम्मेलन, भजन एवं प्रवचन**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ–सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **धन्यवाद व समापन सत्र**

वेद–गोष्ठी

विषय	:	**वेद और सत्यार्थप्रकाश का १२वाँ समुल्लास**
स्थान	:	**ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर**
८ नवम्बर	:	उद्‌घाटन सत्र – ११.०० से १२.३० तक
	:	द्वितीय सत्र – १४.३० से १७.०० तक
९ नवम्बर	:	तृतीय सत्र – १०.०० से १२.३० तक
	:	चतुर्थ सत्र – १४.३० से १७.०० तक
१० नवम्बर	:	समापन सत्र

देश के प्राथमिक क्षेत्र में दुर्व्यवस्था

- उमाकान्त उपाध्याय

वर्तमान काल के अर्थशास्त्री देश की आर्थिक व्यवस्था को तीन क्षेत्रों में बाँटकर देखते हैं, प्रथम प्राथमिक क्षेत्र (प्राइमरी सेक्टर), द्वितीय औद्योगिक क्षेत्र (सैकेण्डरी सेक्टर) और तृतीय क्षेत्र (टर्शियरी सेक्टर)। इस लेख में हम प्राथमिक क्षेत्र की कुछ दुर्व्यवस्थाओं की चर्चा कर रहे हैं, प्राथमिक क्षेत्र देश के अर्थतन्त्र की आधारशिला है, इस क्षेत्र में दुर्व्यवस्था का अर्थ होता है कि देश के अन्य आर्थिक क्षेत्र उन दुर्व्यवस्थाओं से अवश्य ही प्रभावित होंगे।

प्राथमिक क्षेत्र (प्राइमरी सेक्टर) में कृषि क्षेत्र और पशु-पालन आदि से प्राप्त उत्पादों को सम्मिलित किया जाता है। अपने देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् अर्थशास्त्रियों का ध्यान प्राथामिक क्षेत्र की ओर सबसे अधिक आकृष्ट हुआ। देश के दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन के पश्चात् परिस्थिति यह बनी कि पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) में अतिरिक्त खाद्यान्नों के उत्पादन का क्षेत्र तथा कपास, गन्ना, जूट आदि कच्चे माल का उत्पादन का क्षेत्र चला गया और अधिक जनसंख्या तथा कच्चे माल को प्रयोग में लाने वाले कल-कारखाने, मिलें और उद्योग भारत में आ गए, अब भारतवर्ष को खाद्यान्नों और कृषि आधारित गन्ना, कपास, जूट आदि की अत्यधिक आवश्यकता का अनुभव हुआ। कृषि का उत्पादन अधिक न बढ़ने से एक और जनता के भूखें मरने का दुर्योग तथा दूसरी ओर मिल-कारखानों में कच्चे माल की आपूर्ति न होने के कारण मिल-कारखानों के चलने में असुविधा तथा बन्द होने का भय उपस्थित हो गया। भारत सरकार ने प्रथम पञ्चवर्षीय योजना (१९५१-१९५६) में कृषि को प्रथम महत्त्व दिया। द्वितीय पञ्च-वर्षीय योजना में कृषि की उपलब्धि के आकलन में भूल के कारण उद्योग को महत्त्व दिया गया किन्तु शीघ्र ही भूल समझ में आ गई और तृतीय पञ्च-वर्षीय योजना (१९६१-१९६६) में पुनः कृषि को प्राथमिकता मिली। कृषि उत्पादन वृद्धि के लिए दो प्रकार की नीतियाँ अपनाई गयीं- (१) अधिक से अधिक भू-भाग को कृषि के उत्पादन के लिए तैयार किया जाये और (२) सघन कृषि और बहु-फसली खेती द्वारा उत्पादन को बढ़ाया जाये।

(१) अधिकतम् भू-भाग को कृषि के लिए प्रयोग करने की नीति में बिना कोई आगे-पीछे सोचे, जंगल, चारागाह, घास के मैदान, तालाब आदि को कृषि कार्य के लिए अधिगृहीत कर लिया गया। असंख्य वृक्ष काट डाले गए, घास के मैदान, चारागाह की जगह खेत बन गए। इसी प्रकार की अनेक विसंगतियाँ पैदा हुईं जिससे वायुमण्डल, पर्यावरण आदि पर बड़ा प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

(२) सघन कृषि के तहत रासायनिक उर्वरकों और बहु-फसल कृषि की नीति अपनाई गयी। परम्परा से प्रचलित गोबर, पत्ते, घास-फूस, पशु-मल-मूत्र, खली आदि जैविक खादों का उत्पादन और प्रयोग घट गया। रासायनिक खादों का प्रचलन बढ़ा। यूरिया, सल्फर, पोटाश उर्वरक आदि पृथ्वी की उत्पादनशीलता को पचाकर फसल के उत्पाद की मात्रा बढ़ा देते हैं किन्तु पृथ्वी की उत्पादन शक्ति में वृद्धि नहीं करते। इधर विदेशों से उन्नत बीज लाये गए। उनको अधिक खाद की आवश्यकता पड़ती है। उसी के साथ रासायनिक उर्वरकों ने कृषि उत्पादन की मात्रा में वृद्धि तो की किन्तु यह भूमि की उत्पादनशीलता का अति-दोहन प्रमाणित हुआ जैसे शिशु माँ का दूध पीते पीते उसका खून भी चूसने लगे। यही स्थिति हमारी सघन कृषि-नीति की हुई। हमने गोबर, पत्ते, घास आदि से बनी जैविक खाद का पूरा प्रबन्ध किये बिना उन्नत बीज और रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग के कारण अच्छी उर्वर भूमि को ऊसर, बंजर बना दिया। यह रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग अल्पकालिक लाभ का प्रमाणित हुआ। पंजाब आदि जिन प्रदेशों में यह सघन कृषि अपनायी गई, वहाँ के किसान कुछ ही वर्षों में अपने को ठगा हुआ, लुटा हुआ अनुभव कर रहे हैं।

प्रारम्भिक क्षेत्र में कृषि और पशुपालन- दो समस्याओं को लिया जाता है। कृषि उत्पादन बढ़ाने को हरित क्रान्ति के नाम से जाना जाता है और पशुपालन तथा संरक्षण से दूध का उत्पादन बढ़ाने की क्रिया को श्वेत क्रान्ति के नाम से पुकारा जाता है।

श्वेत क्रान्ति की विडम्बना- हमारे देश में सवा सौ करोड़ की जनसंख्या बसती है। यहाँ दूध, घी की अच्छी आवश्यकता है। जनता के स्वास्थ्य के लिए भी दूध, दही, मक्खन, घी, सब कुछ आवश्यक है। हमारे देश में श्वेत क्रान्ति के कई अच्छे केन्द्र कार्य कर रहे हैं। गुजरात में अमूल, मध्य प्रदेश में साँची, बिहार में सुधा, उत्तर प्रदेश में.........., पश्चिम बंगाल में मदर डेयरी आदि एजेंसियाँ श्वेत क्रान्ति को सफल बनाने में लगी हुई हैं। अपने देश में गाय, भैंस, बकरी आदि पशु दूध के लिए पाले जाते रहे हैं किन्तु एक तो जंगलों, चारागाहों की बड़ी कमी हो गई है।

गाय, भैंस जब दूध देना बन्द कर देती हैं तो उनके खिलाने-पिलाने का खर्चा बहुत बढ़ जाता है। हरित क्रान्ति से पहले देश के प्राय: सभी गाँवों में गाय, भैंसें आदि बड़ी संख्या में रहती थीं, पाली जाती थीं और जंगलों और चारागाहों में पेट भर चरने का साधन भी उपलब्ध था। अपने देश में गायों, भैसों की बड़ी दूधारू नस्लों की बहुतायत थी। मुर्रा भैंसें ३०-४० लीटर तक दूध देती थीं। हरियाणा की साहीवाल गाय बहुत प्रसिद्ध थी। अब इन नस्लों के पशु बूचड़खाने में जाने लगे हैं और अब ये नस्लें दुर्लभ होती जा रही हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ की चेतावनी- विश्व मार्केट में माँस का दाम बहुत बढ़ गया है अत: भारत सरकार विदेशी मुद्रा कमाने के लिए माँस का निर्यात बड़ी तीव्र गति से बढ़ा रही है। एक रिपोर्ट के अनुसार संयुक्त राष्ट्र संघ के कृषि विभाग ने भयानक चेतावनी दी है कि अगर माँस की निर्यात की यही गति रही तो अगले ४-५ वर्षों में भारत में दूध का भीषण संकट पैदा हो जायेगा। बच्चों को भी दूध नहीं मिल पायेगा। इधर सरकार है कि महंगी विदेशी मुद्रा कमाने के लिए गाय और भैंस के माँस का निर्यात बहुत अधिक बढ़ाती जा रही है। गाय, भैंस के माँस के निर्यात के आँकड़े देश की आत्महत्या के समान लग रहे हैं। सन् २००९ में भारत ने ६ लाख टन माँस का निर्यात किया था। सन् २०१० में ७ लाख २५ हजार टन, सन् २०११ में १२ लाख टन और सन् २०१२ में १५ लाख टन माँस का निर्यात हुआ था। सन् २०१३ में २१ लाख टन माँस निर्यात का अनुमान है। माँस का निर्यात करने वाले देशों में भारत २००७ में १५वें स्थान पर था। २०१२ में दूसरे स्थान पर और अनुमान है कि २०१३ में पहले स्थान पर पहुँच जायेगा। इधर १२वीं पञ्च-वर्षीय योजना में भारत सरकार द्वारा २७ हजार करोड़ रुपयों की लागत से नए, अति-आधुनिक बूचड़खाने बनवाने की योजना है। अब तो देश के गौ-माँस उत्पादक प्रान्तों में भी सरकार की इस नीति के भयानक परिणामों की चर्चा होने लगी है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश गौ-माँस आपूर्ति का बड़ा प्रसिद्ध क्षेत्र है। यहाँ के ''गौ-माँस निर्यात रोको संगठन'' के अधिकतम सदस्य किसान और कसाई हैं। सहारनपुर में गौ-माँस निर्यात का विरोध करने वाले संगठन के संयोजक मोहम्मद इरफान ने बयान दिया है कि यदि गाय और भैंस के माँस का निर्यात रोका नहीं गया तो बच्चों को भी दूध नहीं मिल पायेगा। सरकार माँस के निर्यात से महंगी विदेशी मुद्रा कमाकर विदेशों से दूध का पाऊडर मंगाने की योजना में है। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और ब्राजील ने माँस का निर्यात कम कर दिया है जबकि भारतवर्ष के नीति-निर्माता अपने देश के पशुओं का वध करके विदेशी मुद्रा कमाने के लोभ में है।

विदेशी ऋण चुकाने की किश्त, ऋण और आयात का मूल्य, सब मिला कर हमारे निर्यात से बहुत अधिक है और सरकार अपनी अदूरदर्शी हानिकारक नीतियों के कारण विदेशी कर्ज के मकड़ जाल में फँस गयी है। फलस्वरूप हमारा विदेशी मुद्रा कोष घट रहा है। हो सकता है कि हमें सोना फिर गिरवी रखना पड़े।

- कोलकाता

जैसे सकल ऐश्वर्य का देने वाला जगदीश्वर है वैसे सभाध्यक्षादि मनुष्यों को होना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.३०

सब मनुष्यों को उचित है कि ईश्वर और विद्वान् का सत्कार करना कभी न छोड़ें क्योंकि अन्य किसी से विद्या और सुख का लाभ नहीं हो सकता है इसलिये इन को जानें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.३१

जिस परमेश्वर ने समस्त गुण वाले जगत् को रचा है उन्हीं गुणों से प्रसिद्ध उसकी उपासना सब मनुष्यों को करनी चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.३२

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग १० मास से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ अक्टूबर २०१३ तक)

१. मुमुक्षु मुनि, अजमेर, २. उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ३. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर, ४. देवकीनन्दन गुप्ता, मुरादाबाद, ५. सुखदेव यादव आर्य, सुजानगढ़, चुरू, ६. विक्रम सिंह, निम्बाहेड़ा, चित्तोड़गढ़, ७. अशोक गुप्ता, दिल्ली, ८. नमन गोयल, दिल्ली, ९. सुरेन्द्रसिंह रावत, गाजियाबाद, १०. कर्मवीर, गुड़गाँव, हरियाणा, ११. पंकज कुमार गर्ग, कोलकाता, १२. एम.एल. गोयल, अजमेर, १३. रजनीश कपूर, नई दिल्ली, १४. रिचा एस. शेखर, बैंगलूर, १५. केशव राव नेमा, नागपुर, १६. देशबन्धु गुप्ता, पंचकूला, हरियाणा, १७. अंजली कपूर, दिल्ली।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगत अतिथियों को नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ अक्टूबर २०१३ तक)

१. सूरज प्रसाद गुप्ता, अजमेर २. ओमप्रकाश झालानी, जयपुर, ३. रति देवी बाडया, जयपुर, ४. दिपांशु खण्डेलवाल, जयपुर, ५. विष्णु दत्त गोयल, अजमेर, ६. मंयक कुमार, अजमेर, ७. विक्रमसिंह, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़, ८. चाँद गोयल व मुनिश कुमार बंसल, गाजियाबाद, ९. चित्रा भार्गव, भीलवाड़ा, १०. सन्तोष वर्मा, अजमेर ११. अनिरुद्ध वर्मा, अजमेर, १२. अनिल भार्गव, अजमेर, १३. अनुपमा, अजमेर, १४. माता मृदुला देवी, दिल्ली, १५. सुधा मेहरा, अजमेर, १६. विश्वास पारीक, अजमेर, १७. मुमुक्षु मुनि, अजमेर, १८. सीता देवी शर्मा, अजमेर, १९. परियोजना अधिकारी जिला परिषद, अजमेर, २०. विरदीचन्द गुप्त, जयपुर, २१. बंशीलाल, अजमेर, २२. आशा पाराशर, अजमेर, २३. राकेश जैन, अजमेर, २४. राजेश त्यागी, अजमेर २५. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचौली, अजमेर, २६. श्वेता सूद, नई दिल्ली, २७. कंवल बत्रा, नई दिल्ली, २८. शैलेन्द्र कुमार, मेरठ, २९. टी.के., गुड़गाँव, हरियाणा।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

वेदों की बातें

- रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

चारों वेद हमारी वैदिक संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं। इनकी ऋचाओं-संहिताओं को ध्यान से पढ़ें और मनन करें तो हमें ज्ञान की प्राप्ति होती है। वेदों में अथाह ज्ञान भरा पड़ा है। यह ज्ञान मोक्ष की सीढ़ी का काम करता है। यदि वेद-ज्ञान को व्यावहारिक रूप में लाया जाए तो निश्चय ही हमें मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। प्रस्तुत हैं 'वेदों की बातें' जिन्हें पढ़ना, मनन करना तथा व्यवहार में लाना अति आवश्यक है।

१. **वाचं वदत भद्रया।** (अथर्व. ३.३०.३)
सदा भली वाणी बोलो।

२. **शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त संकिर।** (अथर्व. ३.२४.५)
सैंकड़ों हाथों से कमाओ और हज़ारों हाथों से दान करो।

३. **राष्ट्रं च रोह द्रविणं च रोह।** (अथर्व. १३.१.३४)
राष्ट्र और धन को बढ़ाओ।

४. **स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।** (ऋग्. ५.५१.१५)
हे प्रभो! हम सदा सूर्य और चन्द्रमा के समान कल्याणकारी मार्ग पर चलते रहें।

५. **आप्नुहि श्रेयांसम्।** (अथर्व. २.११.१)
अपने से अधिक गुणवान् के पास रहें।

६. **भद्रमिद् भद्रा कृणवत् सरस्वती।** (ऋग्. ७.९६.३)
कल्याणी विद्या सदा कल्याण ही करती है।

७. **भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये।** (ऋग् ८.१९.२०)
युद्ध क्षेत्र में शत्रुओं से लड़ते समय भी मन को नेक रखो।

८. **कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।** (अथर्व. ७.५२.८)
मेरे दाएँ हाथ में पुरुषार्थ और बाएँ हाथ में विजय धरी है।

९. **ब्रह्म क्षेत्रं पवते।** (यजु. १९.५)
ब्रह्म क्षेत्र को पवित्र करता है।

१०. **अघमस्त्वघकृते।** (अथर्व. १०.१.५)
बुरा करने वाले का बुरा होता है।

११. **न दुःष्टती मर्त्यो विन्दते वसु।** (ऋग्. ७.३२.२१)
दुराचारी कभी धन नहीं पाता।

१२. **प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः।** (यजु. ३२.४)
वह परमेश्वर सर्वतोमुख और सर्वत्र वर्तमान है।

१३. **ऋतस्य पथा प्रेत।** (यजु. ७.४५)
सत्य और पवित्र मार्ग पर चलो।

१४. **दक्षिणा वर्म कृणुते विजानन्।** (ऋग्वेद १०.१०७.७)
दान, दाता का कवच होता है।

१५. **यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः।** (अथर्व. ९.१.१४)
यज्ञ सारे संसार का केन्द्र है।

१६. **जाया तप्यते कितवस्य दीना।** (ऋग्वेद १०.३४.१०)
जुआरी की पत्नी दीन और दुःखी रहती है।

१७. **कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।** (यजु. ४०.२)
मनुष्य कर्म करता हुआ सौ वर्ष जीने की इच्छा करे।

१८. **शिवा नः सख्या सन्तु भ्रात्रा।** (ऋग्वेद ४.८.१०)
भाइयों के मेल से हमारा कल्याण होता है।

१९. **सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते।** (अथर्व. १८.१.४१)
सत्कर्मी सरस्वती (विद्या) को बुलाते हैं।

२०. **आत्मा निभृष्टः।** (अथर्व. १९.६०.२)
मेरी आत्मा कभी न गिरे।

२१. **परा तत् सिच्यते राष्ट्रं ब्राह्मणों यत्र जीयते।** (अथर्व. ५.१९.६)
वह राज्य नष्ट हो जाता है जिसमें विद्वान् लोग दबाये जाते हैं।

२२. **तस्मिन्निदं स च विचैति सर्वम्।** (यजु. ३२.८)
यह सम्पूर्ण विश्व उस परमात्मा में ही विलीन होता है और उसी से उत्पन्न होता है।

२३. **अपेहि मनसस्पतेऽपक्राम परश्चर।** (अथर्व. २०.९६.२३)
मानसिक कमजोरियों को दूर कीजिए। मन की दुर्बलता

घातक है।

२४. अपवक्ता हृदयाविधश्चित्। (ऋग्. १.२४.८)
उन कुवासनाओं और मानसिक पापों को त्याग दीजिए, जो आत्मा को कष्ट दें।

२५. आर्या व्रता विसृजन्तो अधि क्षमि।
(ऋग्. १०.६५.११)
धर्म-कर्त्तव्यों का पालन करने वाले ही देव हैं।

२६. मात्र तिष्ठः पराङ्मना। (अथर्व. ८.१.९)
जीवन के किसी भी क्षेत्र में शिथिलता और अनुत्साह ठीक नहीं।

२७. वीरयध्वं प्र तरता। (अथर्व. १२.२.२६)
इस संसार-सागर में उद्योगी ही पार होते हैं।

२८. मा शपन्तं प्रति वोचे देवयन्तम्।
(ऋग्. १.४१.८)
सत्कार्यों में विघ्न उत्पन्न करने वाले दुष्टों का बहिष्कार कीजिए।

२९. शतं जीव शरदो वर्धमानः। (अथर्व. ३.११.४)
सौ वर्ष तक उन्नतिशील स्मृद्धिपूर्ण जीवन जीओ।

३०. स्वयं वर्धस्व तन्वं। (ऋग्. ७.८.५)
अपने शरीर को निरन्तर बलवान् बनाओ।

३१. अश्मानं तन्वं कृधि। (अथर्व. १.२.२)
अपने शरीर को पत्थर जैसा सुदृढ़ बनाओ।

३२. दृंहस्व मा ह्वाः। (यजु. १.९)
सुदृढ़ तो बनो, पर उदण्ड कदापि नहीं।

३३. विश्वं समत्रिणं दह। (ऋग्वेद १.३६.१४)
सर्वभक्षी लोग रोगों की अग्नि में जलते हैं।

३४. उतो रयिः पृणतो नो पदस्यति।
(ऋग्. १०.११७.१)
दान देने वाले सत्पुरुषों की सम्पदा घटती नहीं, सदा उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है।

३५. उतादित्सन्तं दापयतु प्रजानन्।
(अथर्व. ३.२०.८)
कंजूसों को भी निरन्तर दान देने की ही प्रेरणा देते रहिए।

३६. न स्तेय मद्मि। (अथर्व. १४.१.५७)
चोरी का धन कभी भी कार्य में मत लीजिए।

३७. प्र पतेतः पापि लक्ष्मी। (अथर्व.७.११५.१)
पाप की कमाई छोड़ दीजिए।

३८. सर्वान् पथो अनृणा आ क्षियेम।
(अथर्व. ६.११७.३)
जो ऋण मुक्त है, उसी की उन्नति होती है।

३९. त्वं तपः परितप्याजयः स्वः।
(ऋग्. १०.१६७.१)
तू तप-तप कर अपने आप को और स्वर्ग को जीत।

४०. तेजोसि तेजो मयि धेहि। (यजु. १९.९)
हे ईश्वर तू तेजस्वी है, मुझे भी तेजस्वी बना।

४१. मा मा प्रापत् पाप्मा मोत मृत्युः।
(अथर्व. १७.१.२९)
मुझे पाप और मौत न मिले।

४२. वर्षिष्ठमरुहन्त श्रविष्ठाः। (अथर्व. १९.४९.२)
बलवान् उच्च पद को पाते हैं।

४३. समुद्रो अस्मि वि धर्मणा। (अथर्व. १६.३.६)
मैं सहनशीलता में समुद्र के समान गम्भीर बनूँ।

४४. मा ते मोच्यनृतवाङ् नृचक्षः।
(अथर्व. ४.१६.७)
हे सर्वद्रष्टा प्रभो, कोई ढोंगी तुझ से मुक्ति नहीं पाता।

४५. मा पुरा जरसो मृथाः। (अथर्व. ५.३०.१७)
बुढ़ापे से पहले मत मरो।

४६. अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा सह सन्तु।
(अथर्व. १९.६०.२०)
मेरा शरीर और उसके सभी अंग हृष्ट-पुष्ट हों।

- सिहाल (कांगड़ा), हिमाचल प्रदेश-१७६०५३

हे मनुष्यों! आप लोग जैसे जगदीश्वर सत्य भाव से प्रार्थित और सेवन किया हुआ अत्युत्तम विद्वान् सब को सुख देता है वैसे यह यज्ञ भी विद्या गुण को बढ़ाकर सब जीवों को सुख देता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२७

मनुष्यों को चाहिये कि जिन यज्ञ करने वाले यजमान की पत्नी और यजमान से तथा जिस यज्ञ से दृढ़ विद्या और सुखों को पाकर दु:खों को छोड़ें उनका सत्कार तथा उस यज्ञ का अनुष्ठान सदा ही करते रहें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२८

जिज्ञासा समाधान – ५०

-आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा १- मुझे परोपकारी पत्रिका वर्षों से मिल रही है। मैं परोपकारिणी सभा का आभारी हूँ। विद्वद्-गोष्ठी का कार्य सराहनीय है। कर्मकाण्ड में एकरूपता लाने के लिए सराहनीय कार्य हो रहा है। मुझे कुछ सन्देह हैं। कृपया उन्हें दूर कीजिए। विवाह संस्कार में जो चार परिक्रमाएँ हैं, उनमें कौन आगे चलता है वर या वधू कृपया प्रमाण देकर बताइये। दूसरा प्रश्न है कि मॉरिशस में अन्त्येष्टि संस्कार के बाद मृतक के घर तीन दिन लगातार यज्ञ होता है, फिर दशवें दिन, चालीसवें दिन और एक वर्ष के बाद। कुछ लोगों की ऐसी धारणा है कि ये सारे कार्य मंगल कार्य नहीं है अत: अष्टाज्याहुति के मन्त्रों से आहुतियाँ नहीं देनी चाहिए। क्या है मंगल कार्य? क्या है अमंगल कार्य? स्पष्ट कीजिये।

पण्डित धर्मेन्द्र रीचप, मॉरिशस

समाधान १. विवाह संस्कार में जो चार परिक्रमाएँ हैं उनमें वर ही आगे चलता है और वधू वर के पीछे चलती है। इस विषय के लिए संस्कार विधि में स्पष्ट प्रमाण हैं-

(क) पाणिग्रहण के मन्त्रों के बाद महर्षि लिखते हैं ''इन पाणिग्रहण के छः मन्त्रों को बोल के, पश्चात् वर, वधू की हस्ताञ्जली पकड़ के उठावे और उसको साथ लेके.....यज्ञकुण्ड की प्रदक्षिणा करके.....।'' यहाँ महर्षि के वचनों से स्पष्ट है कि वर, वधू की हस्ताञ्जली पकड़ कर उठाता है और उसको साथ ले (वधू को साथ ले) प्रदक्षिणा करता है। अर्थात् प्रदक्षिणा करते हुए वर आगे-आगे चलता है और वधू, वर के पीछे-पीछे चलती है।

(ख) लाजा होम के तीन मन्त्रों से धाणी की आहुति के बाद-**ओं सरस्वति प्रेदमव..... स्त्रीणामुत्तमं यशः।।** इस मन्त्र के बाद संस्कार विधि में लिखा है ''इन मन्त्रों को बोल के अपने जमणे हाथ की हस्ताञ्जली से वधू की हस्ताञ्जली पकड़ के, वर-**ओं तुभ्यमग्रे...... अग्ने प्रजया सह।।१।। ओं कन्यला पितृभ्य..... इवातिगाहेमहि द्विषः।।२।।** इन मन्त्रों को पढ़ यज्ञकुण्ड की प्रदक्षिणा कर के....।'' यहाँ भी वर, वधू की हस्ताञ्जली पकड़ कर दो मन्त्र बोल प्रदक्षिणा करता है और वधू पीछे रहती हुई चलती है।

वैदिक विवाह संस्कार में तो प्रदक्षिणा करते हुए सर्वत्र वर ही आगे रहता है। पौराणिक संस्कार कराते हुए वधू को भी आगे रख प्रदक्षिणा कराते हैं।

२. अन्त्येष्टि संस्कार के बाद मृतक के घर तीन दिन लगातार यज्ञ होता है और बाद में भी दिन विशेष में यज्ञ करते हैं यह बात अच्छी है। आपका कहना है कि वहाँ (मॉरिशस) में कुछ लोगों की धारणा है कि इस प्रकार के यज्ञ इन दिनों में करना कराना मंगल कार्य नहीं है। इसलिए अष्टाज्याहुति के मन्त्रों से आहुति नहीं देनी चाहिए। अब यहाँ विचार करें कि वह दिन मंगलकारी नहीं है या यज्ञकर्म मंगल कार्य नहीं है? परमेश्वर के बनाये सब दिन ही एक जैसे हैं, दिनों में अपनी मंगलता-अमंगलता कुछ भी नहीं है। इसलिए किसी दिन विशेष को मंगल या अमंगल कहना ठीक नहीं। अब यज्ञकर्म देखें तो पता चलता है कि यज्ञकर्म तो मंगल कार्य ही है वह अमंगल कभी होता ही नहीं है। जब ऐसी बात है तो इसको अमंगल कार्य मान अष्टाज्याहुति के मन्त्रों से आहुति न देना ठीक नहीं है। यज्ञ में ईश्वर स्तुति-प्रार्थना उपासना से लेकर यज्ञ की पूर्ण आहुति तक सभी मन्त्र मंगलकारी ही हैं, अर्थात् विशेष अर्थ उन मन्त्रों के हैं जिनसे हमारा जीवन कल्याण की ओर अग्रसर होता है। जब यज्ञ कर्म मंगल कार्य ही है तब उसको अमंगल कहकर अष्टाज्याहुति मन्त्रों से आहुति न देना उचित नहीं है और आपके अनुसार यह धारणा भी कुछ लोगों की है जो गलत हो सकती है। हाँ जहाँ महर्षि ने जिन संस्कार विशेषों में इन मन्त्रों का विधान नहीं किया वहाँ इनसे आहुति नहीं देनी चाहिए।

जिज्ञासा २. निम्न सात जिज्ञासाएँ ब्र. सुनील आर्य, बीकानेर (राज.) की है, इनका समाधान भी क्रमशः प्रस्तुत है-

जिज्ञासा (क) किसी को अपने कर्मफल से स्त्री का जन्म मिले और वह 'आधुनिक तकनीक से लिङ्ग परिवर्तन कराके पुरुष बन जावे तो, ईश्वर का उसे स्त्री बनने का दण्ड देना (व्यवस्था) तो बिगड़ गया?'

यदि कोई पुरुष स्त्री बन जावे तो ईश्वर द्वारा कर्मफल पूरा कैसे किया जावेगा, क्योंकि स्त्री तो पुरुष से न्यून जन्म माना गया है?

समाधान- ऐसा करके कोई भी पुरुष पूरी तरह स्त्री और कोई भी स्त्री पूरी तरह पुरुष नहीं बन सकती है। रही व्यवस्था बिगड़ने की बात तो परमेश्वर ने आत्मा को कर्म करने में स्वतन्त्रता दे रखी है, वह ऐसा कर सकता है, यह उसकी स्वतन्त्रता है। जो व्यवस्था बिगाड़ता है उसको ईश्वर दण्ड अवश्य देता ही है। यदि कोई पुरुष स्त्री बन जाता है तो पुरुष बनने रूपी कर्मों का शेष फल (जो बचा है) ईश्वर

अगले जन्म में दे देगा। स्त्री को पुरुष जन्म से न्यून कहना उचित नहीं क्योंकि वह भी कर्म करने में उतनी ही स्वतन्त्र है जितना की पुरुष। स्त्री भी पुरुषों की भाँति ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष को प्राप्त कर सकती है।

जिज्ञासा (ख) किसी को कई जन्मों बाद व्याघ्र की योनि मिलने वाली है और तब तक व्याघ्र वंश ही नष्ट हो जावे तो, उसका क्या फल होगा?

समाधान- यदि व्याघ्र योनि इस पृथिवी पर नष्ट हो गई तो भी परमेश्वर के लिए उन आत्माओं को फल देने में कोई बाधा नहीं है। क्योंकि परमात्मा के इस विशाल ब्रह्माण्ड में हमारी पृथिवी की तरह और करोड़ों पृथिवियाँ हैं, जहाँ महर्षि दयानन्द के अनुसार प्राणी जगत् है, ईश्वर ऐसी आत्मा को कि जिसको व्याघ्र की योनि मिलनी थी उसको अन्य पृथिवी पर पहुँचा कर फल दे देगा। अथवा मान लेवें (ऐसा होना असम्भव है फिर भी) कि सर्वत्र व्याघ्र योनि ही नष्ट हो गई तो भी परमात्मा फल तो देगा ही क्योंकि परमात्मा के पास अनेक सारे विकल्प भी हैं वह व्याघ्र जैसी अन्य योनि में उस आत्मा को कर्मफल भोगने के लिए भेज देगा।

जिज्ञासा (ग) दूरदर्शन के एक निजी चैनल के एक धारावाहिक में विगत दिनों में प्रश्न उठाया कि यदि 'विकलांगता' पूर्व जन्म में पैरों द्वारा किये गए पाप का फल है तो वर्तमान में जो पोलियो के मरीज मिलने बन्द हो गए हैं तो क्या पैर द्वारा पाप होने भी बन्द हो गए हैं?

समाधान- विकलांगता (पोलियो) पूर्व जन्म में किये पैरों द्वारा पाप का फल है ऐसा पढ़ा-सुना नहीं है। क्योंकि पोलियो वाले बच्चे जब जन्म लेते हैं तब उस समय उनके पैर ठीक-स्वस्थ होते हैं। बाद में जिन बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है उनको एक सूक्ष्म-जीव विशेष के कारण पोलियो होता है। जैसे-जैसे बच्चे वृद्धि को प्राप्त होते हैं और उनकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है उनको पोलियो नहीं होता है। इसको बाल पक्षाघात भी कहते हैं। आजकल लगभग पाँच वर्ष के बच्चों को जो पोलियो की दवा पिलाई जाती है वह भी रोग प्रतिरोधक क्षमता को ही बढ़ाती है जिससे पोलियो नहीं होता है। वर्तमान में जो पोलियो के रोगी मिलने बन्द हो गये इससे यह नहीं कहा जा सकता है कि पैरों द्वारा पाप होने बन्द हो गये। कर्मफल व्यवस्था में शरीर, वाणी, मन इन तीनों के कर्म देख कर फल मिलता है, केवल पैरों के नहीं। यदि इस प्रकार के कर्म होते हैं तो परमात्मा उन कर्मों के फल को भुगाने में समर्थ है।

जिज्ञासा (घ) किसी का रंग काला है, किसी की आँख भूरी है, नाक टेढ़ी है अथवा जन्मान्ध है, परन्तु वर्तमान में लेजर तकनीक, सर्जरी आदि के द्वारा इन सबका समाधान किया जा रहा है, फिर ईश्वर का दण्ड कैसे सफल हो पायेगा?

समाधान- शल्य चिकित्सा से जो त्वचा आदि को परिवर्तित करा लेते हैं और सुन्दर दिखने लगते हैं तो यह उनका पुरुषार्थ है, धन का व्यय उन्होंने किया है, इसलिए वे ऐसा कर पाये। पुरुषार्थ करना परमेश्वर आज्ञा का पालन करना है। जो उन्होंने त्वचा का परिवर्तन कराया, वह परिवर्तित त्वचा, स्वाभाविक त्वचा की तरह सहनशक्ति वाली नहीं होती, उसमें सर्दी-गर्मी सहन करने का सामर्थ्य वैसा नहीं जैसा प्राकृतिक त्वचा में है। हाँ ये काली त्वचा आदि उनका कर्मफल ही था और अब उन्होंने इसको बदल लिया, ऐसा करने से उनके कर्म फल नष्ट हो गये ऐसा नहीं है। क्योंकि ऐसा करने पर भी जो उनका कर्मफल है उसका दण्ड परमेश्वर अवश्य ही देगा भले इस जन्म अथवा अगले जन्म में।

जिज्ञासा (ङ) कोई अन्य व्यक्ति के अनजाने में किए दोष से विकलांग हो गया और जीवन भर दुःख भोगता रहा, तो अब पीड़ित को किस पाप का वा दोष का जीवनभर दुःख मिला?

क्या अनजाने में दोष करने वाले को इसका दण्ड मिलेगा? यदि मिलेगा तो क्यों? क्योंकि इस कर्म में उसकी कामना नहीं थी और हो सकता है हित की चाह में उसके द्वारा अहित हो गया हो।

समाधान- किसी दूसरे व्यक्ति से जाने-अनजाने में किये दोष से अन्य की जो हानि होती है, वह हानि कर्म का फल न होकर कर्म का परिणाम है। जिसकी हानि हुई है यदि उसके कुछ पाप कर्म हैं जिनका फल उसको आगे मिलना था, उन पाप कर्म का फल इतने अंश में ईश्वर उसको नहीं देगा क्योंकि वह दूसरे के द्वारा की गई हानि से भोग रहा है। यदि ऐसे पाप कर्म नहीं थे तो परमेश्वर उसकी क्षतिपूर्ति करेगा, इस जन्म में अन्य सुख-सुविधाएँ प्राप्त कराकर अथवा अगले जन्म में। किसी के अनजाने में किए गए दोष का निश्चित रूप से दण्ड मिलेगा भले ही इस कर्म में उसकी कामना न हो। क्योंकि उस कर्म को करने में उसकी अज्ञानता काम कर रही है, जो भी ज्ञान अथवा अज्ञान पूर्वक कर्म किये जाते हैं उनका फल परमेश्वर देता है। महर्षि जी ने भी व्यवहार भानु में भाव व्यक्त किया है कि दो व्यक्ति कुँए में गिरें, एक जानबूझकर और दूसरा अनजाने में, इन दोनों के हाथ-पैर तो टूटेङ्गे ही। भले जाने अनजाने में कुएँ में गिरे हों।

जिज्ञासा (च) ''मैथुनाद् गर्भविकृतिः'' भावप्रदीप

के अनुसार सन्ध्या काल में किए मैथुन से विकृत गर्भ ठहरता है। परन्तु शंका यह उठती है कि गर्भ विकृत किसके कर्म का फल है? क्या गर्भ ने पूर्व जन्म में पापकर्म किया, उसका या जो माता-पिता ने सन्ध्या काल में मैथुन किया, उसका? यदि यह विकृति माता-पिता के कर्म का फल है तो निर्दोष गर्भ को क्यों दण्ड मिला? यदि यह गर्भ का पूर्व पाप का फल है तो माता-पिता दोषी नहीं होंगे?

समाधान- ऐसा होता हुआ लगता नहीं फिर भी यदि सन्ध्या काल में किये मैथुन से विकृत गर्भ ठहरता है तो माता-पिता दोषी हैं ही जो शास्त्राज्ञा का पालन नहीं कर रहे। रही विकृत गर्भ की बात तो परमेश्वर भी ऐसे माता-पिता के पास इसी प्रकार की आत्मा भेजेगा जिसके कर्म ही विकृत गर्भ वाले हों। मान लेवें की अच्छी आत्मा गर्भ में आ गई और बाद में गर्भ विकृत हो गया तो किसके कर्म का फल है। यहाँ अच्छी आत्मा आयी है तो पता चलता है इसका तो ऐसा कर्म नहीं था फिर भी जो इस आत्मा की हानि हुई परमेश्वर उसकी क्षतिपूर्ति करेगा। और यदि गर्भ विकृत माता-पिता वा किसी अन्य के द्वारा हुआ है तो वे दोषी हैं उनको दण्ड मिलेगा ही।

जिज्ञासा (छ) वर्तमान की स्थिति देख ऐसा लगता है मानो कुछ समय बाद ईश्वर केवल जाति ही दे पाएगा, उसमें कनिष्ठ, मध्यम, उत्तम नहीं दे पाएगा, यहाँ तक कि स्त्री-पुरुष का भेद भी नहीं दे पाएगा, क्योंकि हर समस्या का समाधान हो रहा है, फिर ईश्वर कर्मफल की व्यवस्था कैसे कर पाएगा?

समाधान- वर्तमान की स्थिति देख इतना निराश होने की आवश्यकता नहीं है कि आज प्रत्येक समस्या का समाधान हो रहा है, ऐसे में ईश्वर कर्मफल कैसे दे पायेगा। वर्तमान में अथवा भविष्य में प्रत्येक समस्या का समाधान जीवात्मा कर लेवे ऐसा सम्भव ही नहीं है। क्योंकि जीवात्मा अल्पज्ञ है। प्रत्येक समस्या का समाधान तो सर्वज्ञ परमेश्वर ही कर सकता है। आपने लिखा 'कुछ समय बाद परमेश्वर जाति ही दे पायेगा उसमें कनिष्ठ, मध्यम, उत्तम नहीं दे पायेगा।' ऐसा नहीं है क्योंकि कोई कितनी भी समानता बनाना चाहे तो भी सब समान हो ही नहीं सकते, कनिष्ठ, मध्यम, उत्तम तो रहेंगे ही। क्योंकि सब आत्माओं के अपने-अपने अलग-अलग संस्कार हैं। इसलिए बाह्य रूप से अथवा आन्तरिक रूप से सब समान नहीं हो सकते। रही स्त्री पुरुष का भेद न होने की बात तो यह भी असम्भव है। आप ही मानते हैं कि लिङ्ग परिवर्तन करा कर कोई स्त्री पुरुष बनता है तो कोई पुरुष स्त्री, यहाँ भेद तो अपने आप आ ही गया। भले ही हर समस्या का समाधान हो रहा हो फिर भी ईश्वर को कर्मफल देने में कोई बाधा नहीं क्योंकि परमेश्वर सर्वशक्तिमान् है।

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

हे विद्वान् मनुष्य! जैसे सूर्य अपने प्रकाश से चोर, व्याघ्र आदि प्राणियों को भय दिखा कर अन्य प्राणियों को सुखी करता है वैसे ही तू भी सब शत्रुओं को निवारण कर प्रजा को सुखी कर।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२४

संस्था-समाचार

-१ से १५ अक्टूबर २०१३

१. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम-सम्पन्न कार्यक्रम-(क) १ अक्टूबर २०१३ को अजमेर में सभा के पूर्व सभासद् श्री भौमाराम जी आर्य के पत्नी के देहावसान पर दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए परिवार में यज्ञ सम्पन्न कराया। इस अवसर पर मुमुक्षु मुनि जी आपके साथ थे।

(ख) ६ अक्टूबर २०१३ को कादीपुरी चौक, महेन्द्रगढ़, हरियाणा में हंसमुनि जी द्वारा संस्थापित तपस्थली वानप्रस्थ आश्रम में भवन के उद्घाटन समारोह में भाग लिया। इस अवसर पर आर्य जगत् के विद्वान् यथा स्वामी कर्मवेश जी, स्वामी धर्मवेश जी व प्रतिष्ठित कार्यकर्त्ता राव हरिशचन्द्र जी आदि भी समुपस्थित थे, जिनका सैकड़ों की संख्या में उपस्थित धर्मप्रेमी सज्जनों ने लाभ उठाया।

(ग) सामवेद पारायण यज्ञ:- १२ से १५ अक्टूबर को ऋषि उद्यान परिसर में स्वामी देवेन्द्रानन्द जी द्वारा आयोजित 'सामवेद पारायण यज्ञ' में ब्रह्मत्व प्रदान किया। यह यज्ञ स्वामी जी के जीवन के ८९ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था। वेदपाठ हेतु महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारी-सोमेश जी, शोभित जी, निरञ्जन जी, लक्ष्यवीर जी समुपस्थित थे।

आगामी कार्यक्रम- (क) ८ से १० नवम्बर- ऋषि मेले में भाग लेंगे।

(ख) १५ से १७ नवम्बर २०१३- आर्यसमाज धामावालाँ, देहरादून के उत्सव में भाग लेंगे।

(ग) १८ से २४ नवम्बर २०१३- आर्यसमाज पटेल नगर, दिल्ली के कार्यक्रम में व्याख्यान।

२. आचार्य सानन्द जी का प्रचार कार्यक्रम- ऋषि उद्यान, अजमेर से २९ अगस्त २०१३ को निकलकर सर्वप्रथम इन्दौर पहुँचे, यहाँ आपने आर्यसमाज मलारगंज में रविवारीय यज्ञ-प्रवचन प्रदान किया व शहर के कई आर्य परिवारों , संस्थाओं में प्रचार का कार्य किया। पुन: इन्दौर से आन्ध्र प्रदेश में प्रचार व सम्पर्क का कार्य किया जिनमें आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र प्रदेश; आयर्ससमाज सीताफल मण्डी; कन्या गुरुकुल अलियाबाद; पाणिनि प्रभात कन्या महाविद्यालय हैदराबाद; वटूक विकास केन्द्र, अलियाबाद; निगम-नीडम् वेदगुरुकुल, मेदक आदि प्रमुख संस्थान रहें। इसके अतिरिक्त भी अवसर मिलने पर आर्य विद्यालयों में छात्र-छात्राओं को मार्गदर्शन प्रदान करते रहे। आन्ध्र प्रदेश से महाराष्ट्र स्थित परली-बैद्यनाथ गुरुकुल पहुँचे। वहाँ व्याख्यान प्रदान किया व सम्पर्क का कार्य किया। पुन: आर्य समाज पिम्परी, पूना में तीन दिन ठहरकर प्रात: सायं प्रवचन व सम्पर्क का कार्य किया। वहाँ से मुम्बई पहुँचकर आर्यसमाज वाशी, आर्यसमाज काकड़वाडी आदि में सम्पर्क का कार्य किया। महाराष्ट्र से गुजरात स्थित आर्य संस्थाओं यथा- गुरुकुल टंकारा, राजकोट; आर्यसमाज पोरबन्दर, आर्यसमाज अहमदाबाद, आर्यसमाज गाँधीधाम, सन्त ओधवराम वैदिक गुरुकुल आदि का भ्रमण कर यथासमय प्रवचन के माध्यम से मार्गदर्शन प्रदान किया। पुन: यहाँ से ५ अक्टूबर को ऋषि उद्यान पहुँच कर प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न किया।

३. आचार्य सत्यप्रिय जी का प्रचार कार्यक्रम:- दिनांक ९ से १२ अक्टूबर २०१३ को ग्राम पिपरा, टीकमगढ़ (म.प्र.) में यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न कराया। कार्यक्रम में प्रतिदिन २०० से २५० व्यक्तियों की उपस्थिति रहती थी, आयोजकों में- रामसेवक विश्वकर्मा, नाथूराम कुशवाहा, दशरथ सिंह, महेन्द्र सिंह, कडोरी पटवा, श्रीमती जयकुंवर चौहान, चित्तर सिंह, सत्येन्द्र जी व भज्जु जी प्रमुख थे। आयोजकों ने परोपकारिणी सभा, अजमेर का धन्यवाद ज्ञापित किया कि वह विद्वानों को ऐसे कार्यक्रमों के लिए सदैव उपस्थित कराती रहती है। पुन: यहाँ से आगरा पहुँचकर रजत आर्य व रघुनाथ आर्य जैसे नवयुवकों के माध्यम से महाविद्यालयों के नवयुवक समूह से भेंट की। आपने १५-२० नवयुवकों को ऋषि मेले में लाकर आर्यसमाज से परिचित करवाने का भी आश्वासन दिया।

यज्ञ एवं प्रवचन:- जैसा कि विदित है कि ऋषि उद्यान आर्यजगत् के उन स्थानों में से एक है जहाँ पूरे वर्ष दोनों समय अपरिहार्य रूप से यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम होता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्व निर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। प्रात: प्रवचन के क्रम में सामान्य दिनों में डॉ. धर्मवीर जी जहाँ विभिन्न विषयों पर अपने विचार रखते हैं, वहीं स्वामी विष्वङ् जी अपने योगदर्शन के क्रम को आगे बढ़ाते हैं तथा सायं सत्संग में जहाँ सोमवार से बुधवार को आचार्य सत्येन्द्र जी व्यवहारभानु आदि ऋषि ग्रन्थों का स्वाध्याय कराते हैं, वहीं गुरुवार से शनिवार आचार्य कर्मवीर जी महर्षि के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' का स्वाध्याय करवाते हैं। रविवार को गुरुकुल के ब्रह्मचारियों में से कोई एक ब्रह्मचारी किसी

विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हैं।

अपने प्रवचन क्रम में सभा के कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी ने पञ्चमहायज्ञों की व्याख्या करते हुए बताया कि सभ्य समाज में एक व्यक्ति के अन्यों के प्रति जो-जो कर्त्तव्य हो सकते हैं तथा उन कर्त्तव्यों को निभाने की जो सर्वश्रेष्ठ विधि हो सकती है, उसे ही वैदिक धर्म में पञ्चमहायज्ञ कहा जाता है। अर्थात् परमेश्वर से, पितरों से, सम्बन्धियों से व्यवहार करने की पञ्चमहायज्ञ से भिन्न और कोई श्रेष्ठ विधि हो ही नहीं सकती। संसार के प्रत्येक धर्म में कहा गया है कि व्यक्ति को ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिए कि उसने हमें यह शरीर, संसार बनाकर दिया। इसके लिए एक मुसलमान पाँच बार नमाज पढ़ता है, हिन्दू मूर्ति पूजा करता है लेकिन ब्रह्म यज्ञ से अच्छा, ईश्वर पूजा का और कोई विकल्प हो ही नहीं सकता। मनुस्मृति में कहा गया है कि ब्रह्म यज्ञ करने वाला आयुष्मान् होता है। ये कैसे सम्भव है? इसका समाधान देते हुए आपने बताया कि ब्रह्मयज्ञ के आत्मिक उन्नति आदि जो लाभ हैं, वे तो हैं ही, उनसे अतिरिक्त भी कई लाभ हैं जैसे आप जब सन्ध्या करते हैं तो उतने समय के लिए तनाव-दबाव से दूर होते हैं, तो पुनः आयु तो बढ़नी ही है।

देवयज्ञ और पितृयज्ञ की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि शास्त्र के अनुसार व्यक्ति को अपने देव कर्मों में तथा पितृ कर्मों में कभी भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। मनुष्यों में जो श्रेष्ठ है, वे देव हैं और जो ज्येष्ठ होते हैं, वे पितर कहलाते हैं। (यहाँ ज्येष्ठत्व विद्या, आयु, पद, प्रतिष्ठा आदि की दृष्टि से है।) देवों की पूजा की जाती है और पितरों का श्राद्ध किया जाता है। देवों को भोजन देते समय 'स्वाहा' बोला जाता है और पितरों को भोजन देते समय 'स्वधा' बोला जाता है। किसी भी व्यक्ति या वस्तु के साथ यथायोग्य व्यवहार करना ही, उसकी पूजा है। और जब हम जड़ वस्तुओं का प्रयोग सही प्रकार से करते हैं, तो यह इन जड़ पदार्थों की पूजा है।

कभी-कभी व्यक्ति अपने आदर्श की भी गलत बात का भी अनुकरण कर लेता है। युवा पीढ़ि में यह दोष सर्वाधिक होता है। वे अपने आदर्श किसी रंगकर्मी या खिलाड़ी को बनाकर उसके दोषों को भी अपने व्यक्तित्व में अपना लेते हैं। लेकिन वैदिक समाज में आचार्य व ब्रह्मचारियों के परस्पर व्यवहार इस विषय में अनुकरणीय हो सकते हैं। आचार्य शिष्य को उपदेश देता है कि हमारे जो-जो अनिन्दनीय कर्म है, सद्गुण है, उसका ही तुझे अनुकरण करना है दोषों का नहीं-

यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि, नो इतराणि।
यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि, नो इतराणि।

पुनः दूसरी महत्त्वपूर्ण बात जो आचार्य अपने शिष्य को कहता है, वह यह है कि ज्ञान की कोई सीमा नहीं है,

'अनन्तपारं किल शब्दशास्त्रम्'

अतः मनुष्य को अपनी सीमा के अनुरूप, जीवन-यापन के लिए आवश्यक विद्याओं का ग्रहण पहले कर लेना चाहिए।

हर व्यक्ति के जीवन में संशय की स्थितियाँ उत्पन्न होती रहती है वह यह निर्णय नहीं कर पा रहा होता है कि क्या करना चाहिए? अथवा जो मैं कर रहा हूँ वह सही है या गलत? तो ऐसी परिस्थितियों के लिए प्रधान जी ने बताया कि किसी भी निर्णय पर पहुँचने के लिए व्यक्ति को सर्वप्रथम तटस्थ होना आवश्यक है। जब हम तटस्थ होकर अर्थात् किसी भी पक्ष के प्रति पूर्वाग्रह न रखकर, विचार करते हैं तो हम जिस निर्णय पर पहुँचते हैं, वो सही होते हैं। यदि अज्ञान आदि के कारण निर्णय गलत भी होते हैं तो ये निर्णय हमारे लिए अनुभव बनते हैं। संशित विषय पर व्यक्ति को अपने पूर्ण ज्ञान का प्रयोग कर, तटस्थ होकर निर्णय लेना चाहिए।

सम्मान की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि सम्मान बड़ी अद्‌भुत चीज है, यह कुछ न होते हुए भी बहुत कुछ है। सम्मान केवल मनुष्यों के व्यवहारों में होता है, पशु के लिए इसका कोई महत्त्व नहीं होता है। किसी पशु को यदि सम्मानार्थ माला पहना दी जाए, तो उसे असुविधा ही होती है और मौका पाते ही वह उसे उतार फेंकता है। जब कई पशु एक पंक्ति में खड़े हो और उनमें से कुछ को सम्मान पूर्वक माला पहना दी जाए तथा कुछ को न पहनाई जाए, तो माला पहने हुए पशु को कोई विशेष आनन्द या न पहनने वालों को दुःख नहीं होता है। लेकिन मनुष्य के साथ ठीक इसके विपरीत वाली स्थिति है। वस्तुतः मनुष्य समाज में सम्मान की निष्कार्यता होते हुए भी इसकी अनिवार्यता है।

योग दर्शन के व्याख्या क्रम को आगे बढ़ाते हुए स्वामी विष्वङ् जी ने बताया कि जब अहिंसा-आदि यम के तथा शौच-आदि नियम के पालन करने से साधक का मन सात्विक होने लगता है तो उसे संसार की वस्तुएँ अधिक सुखप्रद लगती हैं। ऐसा कैसे सम्भव हो पाता है? इस प्रश्न का समाधान योगदर्शन के प्रथम पाद के द्वितीय सूत्र के व्यास भाष्य के माध्यम से देते हुए आपने बताया कि

तदेव प्रक्षीणमोहावरणं सर्वतः प्रद्योतमानमनुविद्धं रजोमात्रया धर्मज्ञानवैराग्यैश्वर्योपगं भवति।

अर्थात् जब व्यक्ति दुःखों से पीड़ित हो-होकर दुःखों को दूर करने का साहस जुटाता है, तब मन में जमा हुआ मोह रूपी आवरण धुल जाता है। ऐसी स्थिति में मन सब

ओर से प्रसन्न होता है। बस थोड़ी बहुत रजोगुण की मात्रा न के बराबर उभरी हुई रहती है। इस परिस्थिति में व्यक्ति धर्म में बढ़-चढ़ कर रुचि लेता है और धर्म में ही लगा रहता है। स्वयं को जानने लगता है, औरों को अपने ही जैसा जानता है। संसार की वास्तविकता पहचान लेता है। संसार के सुखों में दु:ख को देखने लगता है और धीरे-धीरे वैराग्य की ओर कदम बढ़ाने लगता है। स्वयं के पास जितने भी ऐश्वर्य रखता है, उन सबका भरपूर उपभोग-प्रयोग उचित रूप में करने लगता है।

सायंकालीन प्रवचन के क्रम में आचार्य सत्येन्द्र जी ने व्यवहारभानु ग्रन्थ के माध्यम से गुरु-शिष्य के परस्पर व्यवहार की व्याख्या की। सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्या कराते हुए आचार्य कर्मवीर जी ने बताया कि वेदादि सत्य शास्त्रों का मुख्य उद्देश्य उस परमसत्ता, परमेश्वर अर्थात् परमपद को ही बताना है, जिसका मुख्य नाम ओ३म् है। आगे तप की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि परमेश्वर की प्राप्ति व उसकी आज्ञा पालन में भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, मान-अपमान, सत्य का पालन, धर्माचरण और वेदाज्ञा को सर्वोपरि माना जाता है और यही वास्तविक तप है इसके विपरीत कुछ स्वार्थों की पूर्ति के लिए शरीर को व्यर्थ कष्ट देना, तरह-तरह के शारीरिक प्रदर्शन करना, तप न होकर अधर्माचरण है। ब्र. सामरथ जी ने अपने प्रवचन में महर्षि दयानन्द तथा उनके पूर्ववर्त्ती व बाद में होने वाले तथाकथित सन्तों, धर्माचार्यों, सुधारकों का तुलनात्मक विवेचन किया।

- ब्र. लक्ष्यवीर व दीपक आर्य

आर्यजगत् के समाचार

१. यज्ञ सम्पन्न- रविवार ६ अक्टूबर को महिला आर्यसमाज मानसरोवर, जयपुर ने १९वें स्थापना दिवस समारोह पर चतुर्वेद शतकम यज्ञ की पूर्णाहुति की।

चार दिवसीय यज्ञ के ब्रह्मा वेद विद् डॉ. कृष्णा पाल सिंह एवं वेदपाठी श्रीमती श्रुति शास्त्री तथा दीपक आर्य रहे।

२. शिविर का समापन- दिनांक १-१०-२०१३ से पूज्य स्वामी अमृतानन्द सरस्वती होशंगाबाद (म.प्र.) के सान्निध्य में शुरु हुआ 'ध्यान योग शिविर' रविवार ६-१०-२०१३ राष्ट्र समृद्धि यज्ञ व पूज्य स्वामी जी के प्रवचन के साथ सम्पन्न हुआ। सभी ने पूज्य स्वामी जी का सत्कार किया। इस अवसर पर वैदिक साहित्य भी लोगों ने क्रय किया। जलपान के साथ शिविर का समापन हुआ।

३. वार्षिकोत्सव मनाया- आर्यसमाज मगरा पुंजला, जोधपुर का ७७वाँ वार्षिक उत्सव दिनांक ४ से ६ अक्टूबर २०१३ को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक प्रवक्ता व गायक श्री संजीव रूप जी आर्य बदायूँ, उत्तर प्रदेश के ब्रह्मत्व में प्रात: यज्ञ, भजन व प्रवचन एवं सायंकाल भजन व प्रवचन हुए। इस अवसर पर प्रधान भीकमसिंह गहलोत, उपप्रधान प्रेमसिंह साँखला, मन्त्री जयसिंह भाटी, उपमंत्री हुकमसिंह साँखला, कोषाध्यक्ष श्री ब्रह्मसिंह परिहार, हरिसिंह साँखला व हंसराज गहलोत ने विद्वानों का सम्मान किया। श्री प्रेमसिंह साँखला, श्री हुकमसिंह साँखला, श्री हंसराज गहलोत व शिवराम आर्य का विशेष सहयोग रहा।

पूर्व प्रधान एवं संरक्षक श्री जगदीशसिंह आर्य ने श्री विजयसिंह भाटी तथा श्री अचलसिंह भाटी ने श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल का सम्मान किया।

४. भगतसिंह जयन्ती मनाई- आर्यसमाज रामपुरा कोटा द्वारा संचालित मातृ सेवा सदन एवं बाल भारती आर्य शिशु शाला बालिका विद्यालय में २८ सितम्बर को क्रान्तिकारी भगतसिंह जयन्ती बड़ी धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर आर्यसमाज के मन्त्री एवं मातृ सेवा सदन बालिका विद्यालय के व्यवस्थापक श्री डी.पी. मिश्रा ने सैकड़ों छात्र/छात्राओं को सम्बोधित किया।

५. वेद प्रचार- जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा नागौर के द्वारा वेदप्रचार, सत्संगों व यज्ञ के माध्यम से दिनांक २ से २६ सितम्बर २०१३ तक नागौर जिले की समस्त तहसीलों व आर्य समाजों में किया गया। इनका संचालन किशनाराम आर्य बीलू प्रधान जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा नागौर ने किया। भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्र सिंह आर्य व श्री लेखराम शर्मा थे। इनमें प्रवचनों के लिए विद्वान् आर्य स्वामी सत्यानन्द सरस्वती फलौदी, श्री ओममुनि मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर, श्री मुमुक्षु मुनि, श्री यश मुनि, श्री नारायण स्वामी, श्री राजाराम स्वामी के प्रवचन हुए एवं हवन में ब्रह्मा का कार्य किया जिसमें नशा मुक्ति, भ्रुण हत्या, गो हत्या रुकवाना, झाड़-फूंक, जादू टोना, नारी शिक्षा, वेद प्रचार, सत्यार्थप्रकाश आदि विषयों पर प्रवचन होते रहे तथा कार्यक्रम में सत्यार्थ प्रकाश भी बटवाया गया।

६. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज भरथना (इटावा) उत्तर प्रदेश में २ से ६ अक्टूबर २०१३ वेद कथा का पंचदिवसीय कार्यक्रम रखा गया था। दिन में २ सत्रों में प्रात: सायं यज्ञ, भजन व प्रवचन होते थे। यज्ञ के ब्रह्मा व

मुख्य वक्ता होशंगाबाद मध्य प्रदेश के आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी थे। जिन्होंने अलग-अलग सत्रों में वेद मन्त्रों तथा ऋषि ग्रन्थों के आधार पर वैदिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। १५ किलोमीटर दूर नवोदय विद्यालय के लगभग प्रबुद्ध ५५० छात्र/छात्राओं (जिनमें कुछ छात्र कश्मीर के भी है) के बीच उपदेश का विशेष कार्यक्रम रखा गया। जिसका बहुत अच्छा प्रभाव रहा। अन्तिम दिन २० यज्ञ वेदियों पर ६५ यजमान दम्पतियों द्वारा पूर्णाहुति देने का अभूतपूर्व कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में स्वामी प्रभुवेश जी औरैया, आचार्य श्री राजदेव जी गुरुकुल एरवा कटरा, पण्डित सन्दीप वैदिक (भजनोपदेशक) मुजफ्फरनगर, श्रीमती क्षमा पुरवार (भजनोपदेशिका) आदि विद्वान् महानुभावों के सारगर्भित उपदेश सुनने को मिले। अन्त में आर्यसमाज की प्रधाना माता श्रीमती सीतादेवी आर्या ने सबका धन्यवाद किया।

७. सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न- चालीस दिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ के दसवें दिवस पर यज्ञ, आर्यसमाज के प्रागण में हुआ। मुख्य यजमान श्री प्रकाशचन्द्र वशिष्ठ रहे। यज्ञ श्रीमती शोभा आर्य के पुरोहित्य में हुआ, यज्ञ के उपरान्त वैदिक विदुषी श्रीमती मीना वर्मा ने अपने प्रवचनों से लभान्वित किया। तत्पश्चात् मुख्य यजमान श्री प्रकाशचन्द वशिष्ठ ने भजनो के माध्यम से वातावरण को वेदमय बनाया।

८. कार्यक्रम सम्पन्न- यज्ञ समिति झज्जर, हरियाणा के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में आर्यसमाज झज्जर के उपप्रधान महाशय रतीराम आर्य के संयोजकत्व में यज्ञ, भजन, प्रवचन, अभिनन्दन समारोह हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। अनमोल, टींकू, ज्योति, राहुल, उमेश आदि बच्चों ने हवन सम्पन्न कराया। श्रीमती सोनिया एवं श्री मुकेश आर्य मुख्य यजमान रहे। भट्टी गेट मौहल्ले के सैकड़ों बच्चों ने समाज में सौहार्दपूर्ण वातावरण की कामना की पूर्ति के लिए हवनकुण्ड में आहुतियाँ प्रदान की।

९. वार्षिकोत्सव मनाया- आर्यसमाज जवाहर नगर, लुधियाना का वार्षिक उत्सव ३ से ६ अक्टूबर २०१३ को बड़ी श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाया गया। पं. बालकृष्ण के ब्रह्मत्व में मंगल यज्ञ किया गया जिसकी ज्योति श्रीमती एवं श्री राकेश जैन व रजनीश सरीन ने प्रज्ज्वलित की। उत्सव का कार्यक्रम प्रतिदिन प्रातः एवं रात्री को चला जिसमें यज्ञ, मनोहर भजन एवं विद्वानों के उत्तम प्रवचन हुए।

१०. धर्म शिक्षक उपलब्ध-राष्ट्र सहायक उच्च माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर ने अपने से सम्बन्धित विद्यालयों में ५ धर्म शिक्षकों की पूर्ति के लिए शास्त्री/आचार्य, बी.एड. किये हुए १० व्यक्तियों को चुन कर उन्हें लगभग २ माह का वैदिक सैद्धान्तिक, आध्यात्मिक प्रशिक्षण प्रदान करने का कार्यक्रम १३ अक्टूबर से आरम्भ कर दिया है। यह प्रशिक्षण तपोवन- देहरादून, ऋषि उद्यान अजमेर व वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़-गुजरात में दिया जायेगा। इसका समापन ७ दिसम्बर २०१३ को बीकानेर में होगा। इन १० व्यक्तियों में से ५ का चयन बीकानेर हेतु व १ का चयन कर्नाटक हेतु होगा। शेष ४ धर्म शिक्षक सेवा के लिए उपलब्ध रहेंगे। यदि आर्यसमाज के किसी विद्यालय को धर्म शिक्षक की आवश्यकता हो तो अपने विवरण व प्रस्ताव को rsvjnv@gmail.com पर ईमेल द्वारा प्रेषित करें। इस विषय में पूछताछ के लिए सम्पर्क करें- ०९६८७९४१७७८, समय- सायं ४ से ५ के मध्य।

वैवाहिक

११. वधू की आवश्यकता- आयु ३० वर्ष, कद ५ फुट ४ इंच, एम.ए., एम.फिल,लब्धस्वर्णपदक, बी.एड., पीएच.डी. शोधरत, सीटेट, आरटेट, नेट, पी.जी. योग डिप्लोमा, प्रतिष्ठित विद्यालय में स्थाई रूप से कार्यरत, वार्षिक आय लगभग ४ लाख रुपये, युवक के लिए वधू की आवश्यकता है। सम्पर्क- ०९७८५६८२५८८, समय- सायं ५ से १०, ई-मेल- say2ndv@gmail.com

१२. वधू की आवश्यकता- आयु ३५ वर्ष, व्यवसाय सहायक प्रोफेसर, प्राइवेट मैनेजमेन्ट इन्स्टीट्यूट, लखनऊ, उ.प्र., निवास लखनऊ में माता-पिता के साथ, वार्षिक आय ४-५ लाख, परिवार-पिता पूर्व भारतीय प्रशानिक अधिकारी, माता गृहिणी, बड़ी बहन नोयड़ा में, बड़ा भाई विवाहित अमेरिका में। सम्पर्क सूत्र- ०९६७०२३१५२५

चुनाव

१३. आर्यसमाज मानटाउन, सवाई माधोपुर के चुनाव में **प्रधान**- डॉ. आर.पी. गुप्ता, **मन्त्री**- रामजीलाल आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री सोमेश माहेश्वरी को चुना गया।

१४. महिला आर्यसमाज मानटाउन, सवाई माधोपुर के चुनाव में **प्रधाना**- श्रीमती मनोहर देवी गुप्ता, **मन्त्राणि**- श्रीमती अनिता माहेश्वरी, **कोषाध्यक्षा**- श्रीमती नीलम माहेश्वरी को चुना गया।

शोक समाचार

१५. परोपकारिणी सभा कार्यालय से जुड़े रहे श्री रामदेव आर्य 'आर्य विहार' पुष्कर मार्ग, अजमेर की धर्मपत्नि श्रीमती निर्मला कुमारी आर्य का आकस्मिक निधन दिनांक ९ अक्टूबर २०१३ को हो गया। परोपकारी परिवार इस अवसर पर हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

परोपकारी कार्तिक कृष्ण २०७०। नवम्बर (प्रथम) २०१३ ४३

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक   प्रेषण : ३० अक्टूबर , २०१३   RNI. NO. ३९५९/५९

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में

१३० वाँ ऋषि बलिदान समारोह

सभी आर्यजनों को **सादर आमन्त्रण** है।

विशेष-आकर्षण : ऋग्वेद पारायण यज्ञ, वेदगोष्ठी, चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता, विद्वानों का सम्मान

ऋषि मेला

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करें और महर्षि के स्वप्न को साकार करें।

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

डाक टिकिट